SAPTHAGIRI
(HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED
MONTHLY
Volume:54, Issue: 03
AUGUST-2023,
Price Rs.20/-.
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

अगस्त 2023

रु. 20/-

तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का पवित्रोत्सव

27-08-2023 से 29-08-2023 तक

सप्तगिरि पाठकों के लिए सूचना

'सप्तगिरि' एक आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका है। सप्तगिरि के लिए आपका प्रेम अद्वितीय और असाधारण है। 'सप्तगिरि' ति.ति.दे. के और पाठकों के बीच एक पुल के जैसा काम कर रही हैं।

सप्तगिरि पत्रिका के दाम में परिवर्तन हुआ है।

स्वामी के आगमन की अनुभूति अपने ही घर में पाइए।

सप्तगिरि आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका के लिए चंदा भर कर...

श्रीहरि का अक्षर प्रसाद हर महीने स्वीकार कीजिए।

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

(हिन्दी, तमिल, कन्नड, तेलुगु, अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं में प्रकाशित हो रही है।)

चंदा का विवरण

एक प्रति - रु.20/-

वार्षिक चंदा - रु.240/-

जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) - रु.2,400/-

विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा - रु.1,030/-

दाम में परिवर्तन सितंबर - 2022 महीने से लागू हो गया है।
नये चंदादार पर ही ये परिवर्तन लागू होगा।

अन्य विवरण के लिए कृपया संपर्क करें -
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे. प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति - 517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।
दूरभाषा - 0877-2264363, 2264543.

गुरुनहत्वा हि महानुभावाञ्छ्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके।
हत्वार्थकामांस्तु गुरुनिहैव भुञ्जीय भोगान्
रुधिरप्रदिग्धान्॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग - २-५)

इन महानुभाव गुरुजनों को न मारकर मैं इस लोक में भिक्षा का अन्न भी खाना कल्याणकारक समझता हूँ। क्यों कि गुरुजनों को मारकर भी इस लोक में रुधिर से सने हुए अर्थ और कामरूप भोगों को ही तो भोगूँगा।

गीता पाठेन संतुष्टाः पितरः श्राद्धतर्पिताः।
पितृलोकं प्रयान्त्येव पुत्राशीर्वाद तत्पराः॥

(- गीता मकरंद, गीता की महिमा)

श्राद्ध के अवसर पर तृप्त पितृदेव गीता पाठ से संतुष्ट होकर अपने पुत्रों को आशीर्वाद देकर पितृलोक जाएँगे।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

'पंचगव्यों' से तैयार किए गए उत्पादक

उर्वि नासल बूंद
सर्दी और सर दर्द को कम करती हैं और आंखें, कान तथा नाक के काम को सुगम बनाती हैं।

भूमि हेर्बल फ्लोर क्लीनर
फर्स को साफ बनाता है तथा प्राकृतिक द्रव्यों के द्वारा फर्स को सुगंधित तथा कीटाणुओं से दूर रखता है।

नंदिनी गो-अर्क
नियमित रूप से उपयोग करने से दीर्घायु के साथ-साथ जीवन का स्तर बढता है।

क्षमा गौ उपले
यज्ञ, होम आदि में उपयोग करते हैं। हवा को स्वच्छ बनाते हैं।

भुवति गौ उपले की सलाख
यज्ञ, होम आदि में उपयोग करते हैं। हवा को स्वच्छ बनाते हैं।

अवनि धूप चूर्ण
दुआँ सारे कीटाणुओं से बचाता है।

धरणी अगर बत्ती
भूदेवी की समस्त अच्छाइयों से भरी।

धात्री सांभ्राणी कप्स
स्वास्थ्य के लिए अच्छा।

वैष्णवी धूप स्टिक्स
हवा को स्वच्छ बनाती है।

वाराही धूप कोन्स
चारों तरफ पवित्रता को बिखेरती हैं।

पृथ्वी विभूति
शिव का पवित्र द्रव्य।

दन्षिका हेर्बल टूथ पाउडर
दांतों तथा मसूडों का संरक्षण करता है।

हिरण्मयी हेर्बल फेस प्याक
चेहरे के रंग को अकर्षणीय बनाता है।

मही हेर्बल साबुन
चमडी को सुरक्षित रखता है।

कश्यपी हेर्बल सांपू
चमडी को सुरक्षित रखता है।

तिरुमल और तिरुपति में स्थित ति.ति.दे. पुस्तक बिक्री केंद्रों में और ति.ति.दे. स्थानीय मंदिरों में ये चीज उपलब्ध होते है।

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-५४ अगस्त-२०२३ अंक-०३

विषयसूची

गरुड़ पंचमी	डॉ.एच.एन.गौरीराव	07
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	10
वरलक्ष्मी व्रत	डॉ.एस.हरि	12
भगवद्गीता का प्रवचन	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	14
अदिती	डॉ.के.एम.भवानी	16
श्रीवैष्णव संप्रदाय की मार्गदर्शिका - पंच संस्कार	श्री कृष्णकुमार गुप्ता	17
प्रश्न और समाधान	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	21
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव, प्रो.गोपाल शर्मा	23
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	26
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	31
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	34
ऋषि वामदेव	डॉ.जी.सुजाता	36
वेद गणित की मौखिक गुणक पद्धतियाँ	डॉ.वी.जगदीश	38
पतंजलि के योग सूत्र	डॉ.बी.ज्योत्स्नादेवी	41
चीकू स्वास्थ्य लाभ	डॉ.सुमा जोषि	44
आइये, संस्कृत सीखेंगे...!!	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	46
अगस्त महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - महान दानी	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - बकासुर का वध	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 13		52

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - तिरुमल, उभयदेवेरियों सहित श्री मलयप्पस्वामी।
चित्रकारिणी - तिरुचानूर, श्री पद्मावतीदेवी।

गौरव संपादक
श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी(एफ.ए.सी), ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।
- प्रधान संपादक

संपादकीय

सनातन धर्म मार्ग का सफर

वेदों, उपनिषदों, पुराणों, मंत्रशास्त्रों, स्तोत्रादि वांग्मय सर्वस्व, सनातन धर्म के लिए आलंबन है। उन में जो सार निहित है उसका स्मरण करते हुए आगे बढना ही जीवन का सफलता है। ये उपर्युक्त बातें जीवन के लिए अतीत है समझ कर नजरंदाज न करते हुए, उसका आदर करने से जीवन के निर्वाह करने में मदद करेगा। तभी जीवन सरल और सुगम ढंग से चलेगा।

आदिकाल से भी आदरणीय बननेवाला धर्म सिर्फ सनातन धर्म मात्र है। ''एकं सत् विप्रा बहुधावसंती'' नामक ऋग्वेद में उल्लेखित किया गया है कि सनातन धर्म में अनेक प्रक्रियायें, साधन, साधकों के सुविधा के लिए दिखाया गया है। विविध शक्तियों केलिए प्रतीक माने जानेवाले कई देवताओं, उनके पुजाविधियाँ, विविध व्रत और उनका आचरण करने की तरीका सब कुछ सनातन धर्म में निहित विविध मार्ग ही है।

रोजाने के जीवन में निरंतर धर्माचरण के कारण निश्चल, निर्मल और सुख जीवन प्राप्त होने के अलावा वही धर्म 'रक्षा कवच' बनकर रक्षा करेगा। पुराण, इतिहासों, शास्त्रवांग्मयों में स्थित अनेक विषय, हमारे दैनंदिन जीवन में आचरण के लिए निर्देश किया गया है। परमेश्वर ने अपनी सृष्टि में चराचर सभी जीव राशि को एक नियमित ढंग से व्यवहार करने के लिए शासन किया है। इस प्रकार जगत् के सभी कारोबार एक ही रीति में चलने केलिए निर्देश करनेवाला परब्रह्मा, मानव बुद्धि को पूरा स्वातंत्र दिया है। भगवान से प्राप्त स्वेच्छा का सद्विनियोग करने के लिए धर्मा-धर्मों का बोधन करनेवाला वेदरूप शास्त्र भी भगवान का वर प्रसाद है।

सनातन धर्म से हमारा संबंध जुडा है। अतीत, वर्तमान और भविष्य के तीन कालों, विश्व के सभी-प्रांतों में धर्म लागू होता है। सिर्फ 'आचार मात्र' देश, काल, प्रांत से संबंध रखता है। अधर्म का अनुकरण न करना ही धर्म है। वेद आम जनता से दूर रहने के कारण देश, काल के अनुसार आचारों को महर्षियों ने अपनी स्मृति में रूपान्वित किया है। इसी के अंतर्गत तिरुमल बालाजी से संबंध कई आचार, संप्रदाय, पूजाविधान को प्रचार करनेवालों में श्रीमद् रामानुजाचार्य अग्रगण्य माने गये हैं।

बदलते हुए काल के अनुसार संयुक्त परिवार विघटित होते जा रहे हैं। बच्चे नौकरी के लिए दूसरे राष्ट्रों को जाना, पाश्चात्य संस्कृति को अपनाना, बुजुर्गों की बातों को नजरंदाज करने के कारण सदाचार सब मिटता जा रहा है। इसलिए हम अब क्या कर रहे हैं, आगे क्या करना है? इसका बोध कराना बहुत ही जरूरी है। सनातन धर्म प्रचार करनेवाले ति.ति.देवस्थान अपने हिन्दुधर्म प्रचार परिषद् की ओर से सदाचार के नाम से कई कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं। उदाहरण के दौरान कई बडे, छोटे मंदिरों, भजन मंदिरों का निर्माण करना विशेष की बात है। जहाँ तक हो सके नवयुवक देशकाल परिस्थितियों के अनुसार सांप्रदायों का अनुकरण करने के अलावा आगे पीढी को मार्गदर्शन करने की उद्देश्य और लक्ष्य से आगे बढना है। हम सब सनातन धर्म का आचरण करते हुए नैतिकधर्म में निबद्ध होकर सनातन धर्म मार्ग में सफर करते हुए अपने-अपने जीवन को सुस्थिर बनालेंगे।

धर्मोरक्षति रक्षितः।

गरुड़ पंचमी
के संदर्भ में...

गरुड़ पंचमी

- डॉ.एच.एन.गौरीराव

गरुड़ पंचमी पर्व भगवान विष्णु के वाहन गरुड़ को समर्पित है। जिस दिन भगवान गरुड़ का जन्म हुआ था, उस दिन को गरुड़ पंचमी के रूप में त्यौहार मनाया जाता है। गरुड़ पुराण, भविष्यत् पुराण में गरुड़ के बारे में बताया गया है। पुराणों में गरुड़ की स्तुति भगवान मानकर की गई है। गरुड़ का जन्म सत्ययुग में हुआ था, लेकिन वे त्रेता और द्वापर में भी दिखाई पड़ते हैं। कई मंदिरों में गरुड़ द्वारपालक के रूप में भी दिखाई पड़ता है। प्राचीन वैष्णव मंदिरों के द्वार पर एक ओर गरुड़, तो दूसरी ओर हनुमानजी की मूर्ति प्रतिष्ठित की जाती थी। भगवद्गीता में स्वयं भगवान कृष्ण शक्तिशाली गरुड़ के बारे में बताते है। वे कहते हैं कि 'वैनतेयात् पक्षीनाम' अर्थात् सब पक्षियों में मैं गरुड़ हूँ।

गरुड़ के नाम :

गरुड़ के विविध नाम है। गरुड़ के द्वादश नाम स्तोत्रम् में वे सब नाम आते हैं-

श्रीगरुड़स्य द्वादशनाम स्तोत्रम्
सुपर्णं वैनतेयं च नागारीं नागभीषणम्।
जितान्तकं विषारिं च अजितं विश्वरूपिणम्।
गरुत्मन्तं खगश्रेष्ठं तार्थं कश्यपनन्दनम् ॥1॥
द्वादशैतानि नामानि गरुड़स्य महात्मनः।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय स्नाने वा शयनऽपि वा ॥2॥
विशं नक्रमते तस्य न च हिंसान्ति हिंसाकाः।
संग्रामे व्यवहारे च विजयस्तस्य जायते॥
बन्धनान्मुक्तिमाप्नोति यात्रायां सिद्धिरेव च ॥3॥
॥ इति बृहदतंत्रसारे श्रीगरुड़स्य द्वादशनाम स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

खग श्रेष्ट गरुड़ भगवान के बारह नाम इस प्रकार हैं- 1) सुपर्ण (सुंदर पंखवाले), 2) वैनतेय (विनीता के पुत्र), 3) नागारि (नागों के शत्रु), 4) नागभीषण (नागों के लिये भयंकर), 5) जितान्तक (काल को भी जीतनेवाले), 6) विषारिं (विष के शत्रु), 7) अजित (अपराजेय), 8) विश्वरूप (सर्व स्वरूप), 9) गरुत्मान् (अतिशय पराक्रम सम्पन्न), 10) खगश्रेष्ठ (पक्षियों में सर्व श्रेष्ठ), 11) तार्क्ष (गरुड़), 12) कश्यपनन्दन (महर्षि कश्यप के पुत्र)।

पुराणों में गरुड़ को चील जैसा चोंच, सफेद मुख, स्वर्ण समान सुनहरा देह, बड़े-बड़े लाल रंग के मजबूत पंख, सिर पर किरीट धारण करनेवाले विशालकाय शक्तिमान के रूप में चित्रित किया गया है। भागवत पुराण में कहा गया है कि सामवेद के दो भाग गरुड़ के दो पंख है, और उड़ते समय उनसे सामवेद की ध्वनि निकलती है।

गरुड़ पंचमी से संबंधित कथा :

गरुड़ पंचमी के दिन महिलाएँ शक्तिशाली तथा मातृ प्रेम दिखाने वाले पुत्र के लिए भगवान से प्रार्थना करती है। इससे संबंधित कथा इस प्रकार चलती है -

कद्रू और विनीता सप्तर्षियों में एक कश्यप महर्षि की पत्नियाँ थीं। कद्रू के संतान के रूप में 1000 नागों का जन्म हुआ और विनीता के गर्भ से अरुण और गरुड़ का जन्म हुआ था। अरुण सूर्य देव की सारथी बने। कद्रू हमेशा विनीता से ईर्षा करती थी और उसे नीचे दिखाना चाहती थी। एक बार कद्रू ने विनीता से देवाश्व उच्चैश्रवा के पूंछ के रंग को लेकर प्रतियोगिता में धोखे से जीतकर और उस को अपनी दासी बनाना चाहा। कद्रू ने अश्व का पूंछ काला होने का दावा किया जबकि विनीता ने रंग को सफेद होने का दावा किया। असल में पूंछ का रंग सफेद ही था। दांव की शर्त यह थी कि जो कोई भी शर्त में हार जाते है उसे दूसरे की सेवा करनी चाहिए। कद्रू ने अपने पुत्रों, नागों को उच्चैश्रवा की सफेध पूंछ से लटकने के लिए कहकर विनीता को धोखा दिया। इस प्रकार घोड़े की सफेद पूंछ काली हो गई। शर्त के अनुसार अब विनीता कद्रू और उनके पुत्रों की सेवा करने के लिए दासी बन गई। कद्रू और उनके पुत्रों द्वारा विनीता के साथ और दासी पुत्र होने से गरुड़ के साथ भी बुरा व्यवहार किया गया। इसी कारण से गरुड़ और नागवंशों के बीच द्वेष शुरू हुआ। गरुड़ किसी भी प्रकार अपनी माँ को दासता से मुक्ति दिलाना चाहता था। इसके लिए कद्रू ने एक शर्त रखी कि देवलोक से अमृत लाकर अपने पुत्र नागों को देने पर वह विनीता को दासता से मुक्ति देगी। देवताओं ने अमृत की सुरक्षा के लिए तीन स्तरीय सुरक्षा रखी थी। गरुड़ भगवान, देवलोक जाकर इंद्रादि देवताओं से युद्ध करके और तीन स्तरीय सुरक्षा व्यवस्था को भेद करके अमृत कलश को लेकर आते समय भगवान विष्णु प्रत्यक्ष हुए। गरुड़ अपने पास अमृत कलश होने पर भी उसे स्वयं न पीकर निस्वार्थ बुद्धि से अपनी माँ की दासता से मुक्ति के लिए प्रयत्न करना कोई छोटी बात नहीं है। गरुड़ के इस गुण से भगवान विष्णु प्रसन्न हुए और बलिष्ठ गरुड़ को अपने वाहन के रूप में स्वीकार किया तथा विष्णुजी के पताके का चिह्न भी गरुड़ बने। गरुड़ ने अमृत कलश को नागों को सौंपा और माता को दासता से मुक्ति दिलाई। इसी बीच अमृत पान के लिए जब नाग स्नान करने गये तब इंद्र आकर अमृत कलश को उठाकर ले गये। लेकिन कुछ बूंदे कुश पर गिरे थे। सर्प उन बूंदों पर झपट पड़े, परंतु वे सफल नहीं हुए। सर्पों ने उस कुश को चाटना प्रारंभ किया, लेकिन ऐसा करते ही सर्पों के जीभ के दो टुकड़े हो गए। अमृत का स्पर्श होने के कारण कुश को पवित्र माना जाने लगा। इस तरह गरुड़ की शर्त भी पूरी हो गई और सर्पों को अमृत नहीं मिला। माना जाता है कि जिस दिन गरुड़ ने अपनी माँ को दासता से मुक्ति दिलाई, वह दिन भी श्रावण शुक्ल पंचमी थी।

त्रेतायुग में जब रावण के पुत्र मेघनाथ ने श्रीराम से युद्ध करते हुए श्रीराम को नागपाश से बांध दिया था, तब गरुड़ ने नागपाश के नागों को खाकर श्रीराम को नागपाश के बंधन से मुक्त किया था। गरुड़ के नाम पर एक पुराण भी है। एक बार गरुड़ ने विष्णु जी से मृत्यु के बाद प्राणियों की स्थिति, विविध कर्मों का फल, स्वर्ग, नरक आदि के

बारे में प्रश्न पूछे। भगवान विष्णु गरुड़ के प्रश्नों का उत्तर देते हुए ज्ञानमय उपदेश दिया था। गरुड़ के माध्यम से विष्णु भगवान से दिये गये वचन को 'गरुड़ पुराण' कहा गया है। हिन्दू धर्म में जब किसी के घर में किसी की मौत हो जाती है तो गरुड़ पुराण का पाठ रखा जाता है।

गरुड़ पंचमी व्रत :

गरुड़ पंचमी व्रत को देश के विभिन्न भागों में, मुख्य रूप से आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, गुजरात में, हिंदू लोगों से भक्ति के साथ मनोभीष्ट पूर्ति के लिए मनाया जाता है। व्रत के दिन सुबह को नहाके शुची होकर नए वस्त्र धारण करके घर में पूजा मंडप तैयार किया जाता है। मंडप में पीठ को पवित्र करके उस पर चावल डाल कर गरुड़ मूर्ति को रखकर भगवान का आवाहन करके षोडशोपचार पूजा की जाती है। फूल, अक्षत, गंद आदि भगवान को चढ़ाया जाता है। धूप, दीप आदि अर्पित किया जाता है। नैवेद्य समर्पण के बाद आरती उतारी जाती है। दस गांठोंवाले पवित्र धागे को हाथ में बांधना चाहिए। ब्राह्मणों को संतर्पण तथा दान देने के बाद भक्त को आहार ग्रहण करना चाहिए। पूजा के बाद भगवान के स्तोत्रों का पठन तथा गरुड़ पंचमी की कथा श्रवण करना चाहिए।

गरुड़ पंचमी का महत्व :

गरुड़ पंचमी के दिन को माताओं और पुत्रों के बीच प्यार और स्नेह बढ़ाने के लिए पर्व के रूप में मनाया जाता है। माता की खुशी के लिए सतत प्रयत्न करने वाले पुत्र के रूप में भगवान गरुड़ उजागर होते हैं। गरुड़ को प्रसन्न करने के लिए गरुड़ गायत्री, गरुड़ वशीकरण, गरुड़ दंडकम, गरुड़ कवचम, गरुड़ द्वादश नाम आदि मंत्रों को जो पढ़ता है, उस पर किसी भी प्रकार के विष का प्रभाव नहीं पडता, तथा उसे हर काम में विजय प्राप्त होती है और वह भवबंधनों से मुक्ति प्राप्त करता है। इस दिन गरुड़ शालिग्राम पूजा से मनुष्य की बाधाएँ दूर हो जाती है। अपने भक्तों को ज्ञान, वैराग्य, निडरता और आत्मविश्वास आदि प्रदान करता है।

कुछ प्रसिद्ध गरुड़ मंदिर :

ऋषिकेश से करीब 10 किलोमीटर आगे पौड़ी जिले में प्राचीन गरुड़ मंदिर मिलता है। इस स्थान को 'गरुड़ चट्टी' भी कहा जाता है। वृंदावन में स्थित है प्रसिद्ध ऐतिहासिक गरुड़ गोविंद मंदिर। इसमें गरुड़ पर विराजमान कृष्ण की एक सुंदर मूर्ति है। कर्नाटक के कोलार जिले के मुलाबगल तालुक में कोलादेवी गाँव में स्थित है प्रसिद्ध और शक्तिशाली गरुड़ मंदिर। केरला का एक सुंदर मंदिर जो मलप्पुरम जिले के त्रिप्रांगोड में स्थित है जो विष्णु के वाहन गरुड़ को समर्पित है। शबरिमाला जाने वाले तीर्थयात्री इस मंदिर का दर्शन करते हैं। मान्यता है कि जिस व्यक्ति की कुंडली में कालसर्प दोष होता है, वह गरुड़ मंदिर जाकर गरुड़ भगवान की पूजा करने से दोष के प्रभाव से मुक्ति मिलती है।

तिरुमल में गरुड़ पंचमी उत्सव :

पुराणों के अनुसार श्रीवैष्णव दिव्यदेशों में गरुड़ पंचमी आडंबरतापूर्वक मनाई जाती है। भगवान बालाजी के प्रधान वाहन गरुड़ है। वे हमेशा भगवान विष्णु को अपने पीठ पर बिठाकर जहाँ चाहे वहाँ ले जाते थे। इससे गरुड़ को प्रधान भक्त माना जाता है। गरुड़ वाहन सेवा की एक विशेषता है यह है कि इस दिन को मकरकंठी, लक्ष्मी हार, सहस्त्रनाम माला को उत्सवमूर्ति मलयप्पस्वामी (भगवान वेंकटेश्वर स्वामी की उत्सवमूर्ति) को अलंकृत करते हैं। गरुड़ पंचमी उत्सव को हर वर्ष तिरुमल में वैभवता से मनाते हैं। गरुड़ पंचमी के अवसर पर तिरुमल में रात 7.00 से 9.00 बजे तक सर्वालंकृत शोभायमान श्री मलयप्पस्वामी गरुड़ वाहन में विराजमान होकर चार माडावीथियों में शोभायात्रा करते हुए भक्तों को दर्शन देते हैं। उससे पहले भगवान की प्रत्येक पूजा की जाती है। इस गरुड़ सेवा में अनेक भक्त भाग लेते हैं। माना जाता है कि गरुड़ सेवा में भाग लेने पर ज्ञान, वैराग्य प्राप्ति तथा मन की इच्छाएँ पूर्ण होती है। भगवान के दर्शन से सब पाप मिट जाते है। इस समय चारों ओर गोविंद नामस्मरण प्रतिध्वनित होती है।

(गतांक से)

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

द्वितीय आश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

श्रीनिवास के दिव्य वाक :

"ब्रह्म, रुद्रादि दिक्पालक सभी मेरी बातों को सुनिए। श्रवणा नक्षत्र में मेरे चक्र के साथ मिल कर पुष्करिणी में स्नान करनेवालों को अपने पूर्व जन्म में किए गए सारे पाप दूर हो जाएंगे और भाग्यवान बन कर इह परलोक में सुख-भोग करेंगे। मेरी बातें सत्य हैं। विश्वास कीजिए।" कहने पर शिव और ब्रह्म ने कहा "यह सत्य है" तदूपरांत श्रीनिवास सकल वैभव से अपने मंदिर पहुँच कर वहाँ कल्याण मंटप में बसे।

इस के बाद विखनस आदि प्रमुखों ने प्रसून याग, नित्य होमादि कृत्यों का निर्वहण करके पत्नी समेत हरि को विमान परिक्रमा करवाकर उन के निजी स्थान पर विराजित किया। बाद में ब्रह्मादि दिग्देवता बलि, समापन के रूप में ध्वजारोहण, अंकुरारोपण, संपूर्ण होम, कलशोद्वान और स्वामी को प्रधान कलश वाहन किया। तब श्रीनिवास ने विखनस को कनक, रत्न, खचित सभा मंटप में भेंट प्रदान की है। उसी सभा मंटप में बाद में श्रीदेवी, भूदेवी और नीलादेवी समेत सकल दिव्य भूषण कनकांबर परिमल गंधपुष्प मालाओं से अलंकृत होकर ब्रह्म, रुद्र, देवेंद्र, मुनि, योगीश्वर प्रमुखों, सकल देशाधीश राजाओं से परिवेष्ठित होकर उन की स्तुति करने से हरि ने सकल वैभव को ग्रहण किया। सहस्र करों से दीपित होते सुवर्ण सिंहासन पर आरूढ़ होकर संतोष के साथ ब्रह्म की ओर देखकर इस रूप में कहा। "हे कमलज! आप का संकल्प संपन्न हुआ। मुझे बहुत आनंद हुआ। सुमहित के रूप में संपन्न ये उत्सव आगे 'ब्रह्मोत्सव' नाम से धरती पर प्रसिद्ध होंगे।। स्थिर चित्त से तुम्हारे द्वारा यहाँ संपन्न दिव्य रथोत्सव को भास्वर भक्ति से यहाँ आकर देखनेवाले दुष्कर घोर भव वारिधि पार करके सुख को प्राप्त करेंगे। उन सब की मैं सदा रक्षा करता रहूँगा। हे विधाता! अपने मन में इस पर विश्वास करो। मेरे रूप को मन में लाकर मेरे कीर्तन गाते हुए दूसरे विचारों को छोड कर मुझ पर विश्वास करके, मुझ पर भक्ति से अपने को समर्पित करने की विधि में पूजा करनेवालों के प्रति मैं सदा आसक्त रहूँगा। उन की आपदाओं को दूर करूँगा। भक्ति से उन की सारी कामनाओं को पूरा करूँगा। धन, रत्न, वस्तु, वाहन, धान्य, संतान आदि सब कुछ उन्हें प्रदान करूँगा। इस के अतिरिक्त उन्हें मोक्ष दूंगा। मुझ पर सद्भक्ति दिखानेवाले जनों को सदा मैं सहचर बन कर लाभ पहुँचाऊँगा। जितना वे

मुझ पर विश्वास करेंगे उतना फल उन्हें मैं प्रदान करूँगा। मुझ पर विश्वास नहीं करनेवालों को मैं कुछ नहीं दूंगा। इस पावन स्थल पर भक्ति से जो कोई अन्न, वस्त्र, गृह, पात्र आदि को आर्तजनों को दान करने से वे धन्य हो जाएंगे। अवनि में उन्हें भाग्य प्राप्त हो जाएंगे।'' ऐसा कह कर रुद्र, देवेंद्र आदि को देखकर फिर से इस रूप में कहा।

''हे देवतागण! सूर्य के कन्याराशि में प्रवेश करने पर इस प्रकार उत्सव करना चाहिए। तब आप सब यहाँ पधार कर पर्व के रूप में प्रति वर्ष भक्ति से इस उत्सव में भाग लेना चाहिए। आगे इसी रूप में यहाँ पर भक्ति से इस महोत्सव को मनाना चाहिए। अब मैं यहीं पर रहूँगा।'' कहते राजाओं को बुलाकर 'हे अवनीश! आप वर्ष में एक बार यहाँ पहुँच कर धरती पर आप के द्वारा अर्जित धनराशि में चौथे भाग को ले आकर मुझे समर्पित करके भूरी साम्राज्य आप प्राप्त कर लीजिए।' कहते हरि ने भूमिपतियों को आज्ञा दी है। आगे इस रूप में कहा। ''निर्मल पुण्य कर्म करने के लिए विप्रों से कहा, बिना भूले ब्राह्मण परिवारों की रक्षा करने के लिए राजाओं से कहा, द्विजों का अनुसरण करते हुए धरती पर वाणिज्य करने के लिए वैश्यों से कहा, विप्रों की सेवा करते हुए दास बन कर सुखी रहिए, ऐसा शूद्रों से कहा। ऐसे नियम बना कर आप सब यहाँ पर नित्य पुष्प, तुलसी वनों की स्थापना कीजिए। शांति से कभी भी अपने धर्म से विचलित मत हो जाइए।'' इस रूप में श्रीहरि ने सभी को हित शुभ उपदेश दिया।

ऐसा कहते हरि ने चतुर्वर्ण लोगों को उन के अनुकूल अनुसरणीय धर्मों का उपदेश दिया। वस्त्र, भूषण, चंदन, तांबूलादि अपनी सन्निधि में सभी को भेंट के रूप में दिलाया। 'अब अपने स्थानों पर जाकर एक वर्ष के बाद यहाँ पर आइए' ऐसी आज्ञा दे कर श्रीहरि ने उन की बिदाई की है। तब वे सभी हरि को नमस्कार करके उन की आज्ञाओं का पालन करते हुए वेंकटाचल पर्वत से उतर कर अपने अपने देश लौट गए। तब हरि ने ब्रह्म आदि प्रमुखों को देखकर इस रूप में कहा।

श्रीहरि के द्वारा ब्रह्मादि को बिदाई देना :

''हे ब्रह्मादि देवतागण! मेरी बातें सुनिए! इस वेंकटाद्री पहाड पर जो जन कन्यादान करते हैं उससे मुझे अत्यंत तृप्ति होगी। उन पर मेरी कृपा होगी। इस पहाड पर सकल विद्या दान करनेवालों को और उनके वंशजों को, उनके वंशजों को, उनके वंशजों को अनेक पीढियों तक के लोगों को पुण्यगति प्राप्त होगी। यहाँ पर कोई वृंदावन का निर्माण करके उस में तुलसी के पौधे को गाड कर उस के दलों से भक्ति से जो मुझे समर्पित करेंगे मैं निश्चय के साथ उन को स्वर्ग-साम्राज्य दूंगा।

इस प्रकार एक तुलसी दल का फल अत्यंत दिव्य वर्ष, स्वर्ग भोग, मोक्ष प्रदान करेगा। उन्हें स्वर्ग भोग भी प्राप्त होंगे। इसलिए इस पावन वेंकटाद्री पर सकल दिव्य पुष्पों को पैदा करके उन पुष्पों को सद्भक्ति से मुझे अर्पित करने से वे अहंकार मुक्त होंगे। साथ ही उन्हें जीवन शांति और मोक्ष भी प्राप्त होगा। इस के अतिरिक्त सद्भक्ति से जो षड्रोप अन्नों को यथोचित रूप में मुझे समर्पित करेंगे उन्हें मैं सकल लोकों में शुभ-फल दूंगा। इस प्रकार अनेक प्रकार से कर्म, ज्ञान, भक्ति, धर्म सूक्ष्मों को ब्रह्मादि देवताओं को सुनाकर तदनंतर ब्रह्म की ओर देखकर श्रीहरि ने इस रूप में कहा।

''हे जलज संभवा! तुम सत्यलोक छोड कर इतने दिन यहाँ वास करके ब्रह्मोत्सव जैसे महोत्सवों का निर्वहण किया। इस से हे वनधिजा! मैं, श्रीदेवी, भूदेवी और नीलादेवी अत्यंत संतुष्ट हुए। आप की कीर्ति यहाँ बनी रहेगी। अब तुम्हें और क्या वरदान दे सकता हूँ।'' यह सुन कर सरस्वती पति ने इस रूप में कहा। ''हे जनक! मुझे पहले ही क्षमा करके सब कुछ मुझे दिया है। मुझे किस चीज की कमी है? अब मुझे क्षमा करके हे पिताश्री यहाँ से अदृश्य न होकर यहीं पर बने रहिए। नरक जाने से बचा कर सभी नरों का उद्धार आप यहीं रहते कीजिए। इससे बढ कर मुझे किसी वरदान की जरूरत नहीं है। हे भक्त वरद! हे मुकुंदा!''

क्रमशः

वरलक्ष्मी व्रत

वरलक्ष्मी व्रत के संदर्भ में...

- डॉ.एस.हरि

भारत त्यौहारों और उत्सवों का देश माना जाता है। पुराणों के अनुसार हर तिथि, हर दिन हमारे लिए महत्वपूर्ण है। ऐसी कोई तिथि या दिन नहीं है, जिस दिन कोई उत्सव व त्यौहार नहीं है। वैसे तो उपवास और व्रतों का हमारे देश में बडा महत्व है। इन उपवासों व व्रतों का अपना निर्दिष्ट उद्देश्य व लक्ष्य होते हैं। ऐसे ही व्रतों में वरलक्ष्मी व्रत भी एक है। यह व्रत हर वर्ष सावन माह के पूर्णिमा के पहले आने वाले शुक्रवार को बड़ी श्रद्धा से रखा जाता है। विशेषकर विवाहित महिलाएँ अपने पति की आयुर्वृद्धि, संतान की समृद्धि, परिवार की अभिर्वृद्धि और अष्टैश्वर्य सिद्धी की कामना करती हुयी यह व्रत रखती है। इस दिन महालक्ष्मी के वरलक्ष्मी स्वरूप की पूजा बड़ी निष्ठा के साथ की जाती है। यह दक्षिण भारत में आंध्रप्रदेश, तेलंगाणा, तमिलनाडु, कर्नाटक और महाराष्ट्रा में मनाये जानेवाला प्रमुख अनुष्ठान है।

वरलक्ष्मी व्रत का महत्व :

विष्णु पुराण और नारद पुराण में वरलक्ष्मी व्रत का उल्लेख हुआ है, वरलक्ष्मी व्रत लक्ष्मी और भगवान विष्णु को समर्पित होता है। लक्ष्मी धन और समृद्धि की देवी मानी जाती है। कहा जाता है कि महिलाएँ इस व्रत को रखने से उन्हें 'अष्टलक्ष्मी' सभी आठ शक्तियों की आशीर्वाद प्राप्त होता है। वरलक्ष्मी की पूजा अष्टलक्ष्मी की पूजा के समान है। धन, पृथ्वी, विद्या की आठ देवी, प्यार, प्रसिद्धि, शांति, खुशी, शक्ति आदि

अष्ठलक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है। व्यक्ति के जीवन की दरिद्रता दूर हो जाती है और उसके जीवन में लंबे समय तक खुशहाल बना रहता है।

वरलक्ष्मी व्रत कथा :

इस व्रत कथा को पहले शिव ने अपनी पत्नी पार्वती देवी को सुनाया था। पुराणों के अनुसार प्राचीन काल में मगध राज्य में कुंडी नामक एक नगर था। कहा जाता है कि इस नगर का निर्माण स्वर्ग से हुआ था। इस नगर में एक ब्राह्मण नारी चारुमति अपने परिवार के साथ रहती थी। उन्हें अपने परिवार के प्रति बडी निष्ठा थी। वह अपने कर्तव्य का पालन विधिवत करती थी। साथ ही माँ लक्ष्मी की पूजा बडी श्रद्धा और लगन से करती थी।

एक दिन लक्ष्मी ने उस महिला की पूजा से प्रसन्न होकर उसे सपने में दर्शन दिए और उसे 'वरलक्ष्मी' नामक व्रत करने का आदेश दिया कि इस व्रत को करने से तुम्हें सकल सौभाग्य एवं सुख प्राप्त होगा। इस सपने के बाद चारुमति ने अन्य महिलाओं के साथ इस व्रत रखना शुरू की। चारुमति सावन माह के पूर्णिमा के पहले आने वाले शुक्रवार को 'वरलक्ष्मी व्रत' का श्री गणेश की। अन्य महिलाएँ भी उनका अनुसरण करने लगीं। जैसे ही व्रत का समापन हुआ चारुमति का सौभाग्य पलट गया। उनका शरीर सोने के कई से आभूषण सज गया और वह धन-धान्य से संपन्न हुई। उसको सुख-समृद्धि प्राप्त हुई। अष्टैश्‍र्य की सिद्धि हुई अष्टलक्ष्मी को कृपा उन पर हावी हुई। इस व्रत रखनेवाली अन्य महिलाओं का जीवन भी धन-धान्य संपन्न एवं सुखमय होने लगा। धीरे-धीरे इस 'वरलक्ष्मी व्रत' प्रचार व प्रसार पूरे दक्षिण भारत में बढ़ने लगा। इस प्रकार यह व्रत संकल्प सिद्धि के लिए रखने वाला प्रमुख अनुष्ठान बन पड़ा है।

वरलक्ष्मी व्रत की पूजा विधि :

वरलक्ष्मी व्रत के दिन प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नानादि कार्यों के बाद नये वस्त्र धारण कर लेना चाहिए। पूजा स्थल को गंगा-जल से पवित्र कर लेना चाहिए। तत्पश्‍चात् उपवास के साथ संकल्प कर लेना चाहिए। माँ लक्ष्मी की मूर्ति को नये वस्त्र, आभूषण और फूलों से सजाएँ। एक लकड़ी की चौकी पर एक नया वस्त्र बिछाकर माँ लक्ष्मी और गणेश जी की मूर्ति स्थापित करें। मूर्ति के सामने चावल पर कलश में जल भर कर रख दें। कलश को चंदन या हल्दी लगाना चाहिए। माँ लक्ष्मी की मूर्ति को सुंदर रूप से अलंकृत करें, इसके बाद धूप, दीप, नैवेद्य समर्पित कर मंत्र पढ़ लें। पूजा के उपरांत वरलक्ष्मी व्रत कथा का पाठ करें। अंत में आरती उतार कर सबको प्रसाद का वितरण करना चाहिए।

निष्कर्ष :

वरलक्ष्मी व्रत दक्षिण भारत का एक पवित्र व्रत माना जाता है। विशेषकर विवाहित महिलाएँ अपने पति और परिवार की सुरक्षा के लिए यह व्रत रखती हैं। शास्त्रों में धन, वैभव, संपत्ति, संपन्नता, सुख-समृद्धि एवं अखंड लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए इस दुर्लभ व्रत का उल्लेख किया गया है। अतः इस व्रत को भक्ति एवं श्रद्धा से मनाकर अनंत सुख प्राप्त करें।

''लक्ष्मीं क्षीर समुद्र राज तनयां श्रीरंग धामेश्‍वरीम्,
दासी भूत समस्त देव वनितां लोकैक दीपांकुराम्।
श्री मन्मंदा कटाक्ष लब्धा विभवत् ब्रह्मेंद्र गंगाधराम्
त्वां त्रैलोक्य कुटुंबिनीं सरसिजां वंदे मुकुंद प्रियाम्।।''

भगवद्गीता का आदेश

- श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण

भूमिका :

भरतवर्ष में ऋग्, यजु, साम, अथर्वण नामक चार वेद हैं। 108 उपनिषद हैं। अनगिनत ब्राह्मण हैं। असंख्य आरण्यक हैं। नारद-ब्रह्मसूत्र हैं। और भी है - भगवद्गीता! ये सब भरतखंड के अनुपम, सर्वोत्तम दार्शनिक जीवन-मार्ग-निर्देशक महत्त्व के रूप में उपस्थित होते हुए भरतवर्ष के कीर्त्ति-स्तंभ को शिखरायमान बनाने में चार चाँद लगा रहे हैं।

भारत के चारों वेदों में साक्षात् परब्रह्म के स्वरूप के महान् रूप, वैभव, महिमा आदियों का साक्षात्कार किया गया है। ब्राह्मणों में भारत में वेद-युगानंतर प्रवर्द्धमान नाना प्रकार के वैदिक जातियों का जिक्र है, तो आरण्यकों में नागरिक मानवों के जीवन-परिक्रमा का विशद वर्णन प्रस्तुत है। और-ब्रह्मसूत्र इस सृष्टि एवं प्रकृति का विवेचन करते हैं।

अब रहा ''गीताशास्त्र!'' गीता एक शास्त्र है अर्थात् एक विधा है जीवन का, जो साक्षात् गोलोक के अधिपति श्रीकृष्ण से अपने सहचर नर से संबोधित मानव-जीवन के विधान का वेद-नाद है।

श्रीभद्धगवद्गीता साक्षात् भगवान की दिव्य-वाणी बन कर, सकल वेद-सार से सम्मिलित होकर, उत्तरोत्रा मानव के लिए अति उपयोगी एक अत्युत्तम मार्ग-दर्शक साधन के रूप में विद्यमान है। आइये-गीता के कुछ बोधगम्य विषयों का यहाँ विवेचन कर लें-

कर्म - संभव जीवन :

इस धरापटल पर उद्‌भवित हो आये हुए समस्त प्राणी हर हमेशा कर्म करने में लगे हुए होते हैं। मानव से अन्य प्राणी बिना किसी की प्रेरणा से हमेशा कर्म करने में लगे हुए होते हैं। उन प्राणियों के लिए यह कर्म प्रमुखतया अपने अन्न-संपादन-हेतु हो के रहेगा। मनुष्य तो ज्ञानी प्राणी है। मनुष्य इस धरत्री-चक्र का संचालन जानता है। इसी का जिक्र भगवद्गीता ने अति सरल एवं विशद ढंग से किया है-

श्लोक : *अन्नाद्‌भवंति भूतानि, पर्जन्नादन्नसंभवः।*
यज्ञाद्‌भवंति पर्जन्यो, यज्ञः कर्मसमुद्‌भवः।।
कर्म ब्रह्मोद्‌भवं विद्‌धि, ब्रह्माक्षरसमुद्‌भवम्।
तस्मात् सर्वगतं ब्रह्म, नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्।।

जिस ब्रह्म ने ''क्षिति'' की सृष्टि कर दी थी, उसी ने ''क्षुदा'' (भूख) की भी सृष्टि की थी। क्षुदा यानी भूख साक्षात् परब्रह्म का रूप है। यही परब्रह्म-स्वरूप क्षुदा इस संसार का संचालन कर रहा है!!

''सब प्राणियों का जनम 'अन्न' से होता है! सर्व प्राणियों के लिए आधारभूत अन्न की उत्पत्ति 'वर्षा' से हो रही है! यह परम तत्व वर्षा जो है, वह 'यज्ञ' से संभवित होगी! इस यज्ञों के मूल हैं - मानव के विहित कर्म, जिनका मूल साक्षात् वेद हैं! मनुष्य के लिए यह जानना अनिवार्य है कि वेद, नित्य-स्वरूपी परमात्मा से उद्भवित होकर हैं। अतएव, सर्वव्यापी तथा अव्यय-रूपी परमात्मा सर्वदा इन यज्ञों में ही प्रतिष्ठित होकर उपस्थित है।''

अब यहाँ स्पष्ट रूप से विदित होकर है कि कर्म साक्षात् परमात्मा का रूप बन कर है। इसलिए हर मनुष्य को कर्म करते ही रहने की आवश्यकता है, क्योंकि वह कर्म करते रहने से भगवान की अर्चना या सेवन करते रहेगा। कर्म यज्ञ होगा। यज्ञ से मेघ बनेगा। मेघ वर्षा देगा। वर्षों से अन्न की सृष्टि होगी, जो समस्त प्राणियों के जीवन का मूलाधार तत्व है!!

यह है ''आहार का चक्र'', जो परोक्ष में भगवान की सेवा-अर्चना है!

श्लोक : *मयि सर्वाणि कर्माणि, सन्यस्याध्यात्मचेतसा।*
निराशीनिर्ममो भूत्वा, युध्यस्व विगत ज्वरः।।

''हे मानव! सब कुछ मैं ही हूँ। ये समस्त क्रिया-कर्म मैं ही हूँ। मैं ही अंतर्यामी हूँ। मैं ही कदाचित् परमात्मा हूँ! एक बात में, इस समूचे ब्रह्माण्ड का संचालनकर्त्ता स्वयं'' मैं ही हूँ। तुम तो मुझ अध्यात्मा की ही एक अंश मात्र हो। तू तेरे चित्त को मुझ में समायत्त करो। मुझ पर ध्यान धरो। तेरे समस्त कर्मों को मुझी में बिलगने दो। तेरे समस्त कर्मों को मुझ पर छोड़ कर, तुम विमुक्त बनकर रहो! आशा छोड़ो। ममता का त्याग करो। संताप न करो बिना किसी विचार के उन्मुक्त बनो! और, ऐसे मुक्त प्राणी बन कर युद्ध में (जीवन के संघर्ष में) जुटे रहो, तो पाप-पुण्य का संचालन मैं करूँगा। मैं तुम्हारे समस्त पापों का (क्रिया-कर्मों का) वहन करूँगा और तुम्हें जो फल प्रदत्त करना है, उसका निर्णय मैं लूँगा। तुम्हें मैं बनाऊँगा।''

श्लोक : *धूमेनाव्रियते वह्निः, यथादर्शो मलेन च।*
यथोल्बेनावृतो गर्भः तथा तेनेदमावृतम्।।

लोग खूब पढे-लिखे होने पर भी, कभी-कभी, हित और अनहित का ज्ञान न रखते हुए झंझट में पड़ जाते हैं। इस संबंध में परमेश ने अज्ञान का खूब विवेचन कर जाते हैं। भगवान कहते हैं स्पष्टतम उदाहरण प्रस्तुत करते हुए-

''आग अति प्रकाशमान'' एवं प्रखर होते हुए भी धुएँ से आच्छन्न हो जाने से अपनी प्रखरता खो बैठती है! दर्पन आदर्श भी कहलाता है, जो स्वच्छता का प्रतीक है! दर्पन धूलि धूसरित हो जाने पर अपनी स्वच्छता खो बैठता है! इसी प्रकार गर्भस्थ पिंड भी माया से लपेटे हुए होने के कारण अपना रूप-विकार खो बैठता है! ठीक इसी तरह ज्ञान भी काम-रूपी माया से परिवृत हो जाने से अपना अस्थित्व खो बैठता है।

समापन :

आदमी को जीवन के पथ पर मशाल की तरह पथ-प्रदर्शन कराने की दीपिका है - भगवद्गीता। ऋषि-मुनियों ने उपनिषद, आरण्यकादि महाज्ञान का संचय कर दिया था, तो साक्षात् सृष्टिकर्त्ता परमात्मा भरतखण्ड के निवासियों के लिए ''भगवद्गीता'' नामक स्वयं-कथित ज्ञान-रूपी वस्तु, गुण-पेटिका की भेंट कर गये, जो मनुष्य के लिए अवश्य सिरोधार्य ग्रन्थ है! अस्तु!!

अदिति
(मातृदेवोभव)

- डॉ.के.एम.भवानी

नारी ब्रह्मा कहलानेवाली 'अदिति' कश्यप प्रजापति की पत्नी है। देव माता है। सृष्टि के आरंभ में सृष्टि को आगे बढ़ाने का काम ब्रह्म ने कुछ प्रजापतियों को सौंप दिया। उनमें कश्यप प्रजापति एक है। अदिति के सुसंस्कार और सुशीलता के कारण उसकी योनी से जो पुत्र पैदा हुए थे, वे सब देवता बन गए। इंद्र तो स्वर्ग का अधिपति बन सका।

अदिति के अन्य पुत्र :

इंद्र के साथ-साथ अदिति वरुण और सूर्य की भी माता है। द्वादश आदित्य भी उन्हीं की संतान हैं।

अदिति की बहन दिति भी कश्यप प्रजापति की पत्नी बन गई। उसके अपने जन्म संस्कार के कारण उसके गर्भ से जो पुत्र पैदा हुए थे, वे सब असुर बन गए। एक ही पिता के पुत्र होने पर भी सुर और असुरों के बीच में हमेशा झगड़े होते रहते थे।

वामन अवतार का कारण :

एक बार असुरों के महाराज बलि सुरों के राजा इंद्र को हराकर स्वर्ग सिंहासन हड़प लिया तो इंद्र राज्य भ्रष्ट होकर इधर-उधर भटकने लगे। अदिति से यह सहा नहीं गया। वह पति से कोई ऐसा उपाय बताने की प्रार्थना की कि जिससे इंद्र फिर अपने राज्य को वापस पा सके। तब कश्यप प्रजापति ने उससे महाविष्णु की अनुग्रह के लिए पयो व्रत करने के लिए कहा।

पति के सुझाव के अनुसार अदिति 12,000 दिव्य साल (देव लोक से सालों की गणना के अनुसार) पयो व्रत की। उसके व्रत से संतुष्ट होकर महाविष्णु प्रत्यक्ष हो गए और वर माँगने को कहा। तो अदिति ने अपने पुत्रों के कष्ट दूर करने के लिए कहा। अदिति की ममत्व से मुग्ध होकर भगवान विष्णु उसकी चाह पूरा करने के साथ-साथ वह भी अदिति का पुत्र बनना चाहा इसलिए वामन के रूप में अवतरित हुआ और ब्रह्मचारी के वेश में असुर राजा बलि के पास जाकर तीन कदमों की पृथ्वी को वर के रूप में माँगा और बलि को पाताल लोक भेजकर इंद्र को फिर स्वर्ग वापस दिया। इस प्रकार इंद्र का भाई बनकर पैदा होने के कारण अनंतर काल में विष्णु उपेंद्र कहलाया गया।

नरकासुर - अदिती का संबंध -

एक समय में असुरों का राजा नारकासुर स्वर्ग पर आक्रमण करके इंद्र को हराता है और स्वर्गाधिपति बनकर बहुत ही घमंड से इंद्र की माता अदिती के कर्ण कुंडल को हरण करके ले जाता है। यहीं नरकासुर की मृत्यु की वजह बनती है। अदिती का कुंडल बहुत ही तेजोवान है। उसकी चमक दूर-दूर तक फैलता रहता है। कुंडल एक सुमंगली का सौभाग्य है। एक सती माता को ऐसा कष्ट पहुँचाने के कारण सारे देव गण श्रीकृष्ण के पास जाकर नरकासुर का वध करने की प्रार्थना की तो श्रीकृष्ण लड़ाई में वर के अनुसार नरक को सत्यभामा से मरवाकर अदिती के कुंडल वापस लाकर उसे देता है।

पुराणों के अनुसार माना जाता है कि कौसल्या और दशरथ, देवकी और वसुदेव भी कश्यप और अदिति ही हैं। जब भी भगवान विष्णु को पृथ्वी पर अवतरित होना पड़ा तब वह अपने माता-पिता के रूप में उन्हें ही चुना। इस प्रकार भगवान को अपने गर्भ में भरकर बार-बार उसकी माँ बनी अदिती से भाग्यवान नारी सृष्टि में दूसरा कोई नहीं है। अदिती परम सौभाग्य शाली है। उसका जन्म धन्य और सफल है।

(गतांक से)

श्रीवैष्णव संप्रदाय की मार्गदर्शिका - पंच संस्कार

- श्री कृष्णकुमार गुप्ता

हम श्रीवैष्णव कैसे बनते है?

हमारे पूर्वाचार्यों के अनुसार, एक क्रिया-विधि है, जिसके द्वारा श्रीवैष्णव बना जाता है। इस विधि को ''पंच संस्कार'' (संप्रदाय में दीक्षा) कहा जाता है।

संस्कार अर्थात् शुद्ध/सात्विक होने की प्रक्रिया। यह ऐसी विधि है, जो जीव को अयोग्य अवस्था से योग्य अवस्था में परिवर्तित करती है। इसी विधि के द्वारा ही हम प्रथम बार एक श्रीवैष्णव बनते है। जिस प्रकार ब्राह्मण परिवार में जन्म लेने से ब्रह्म यज्ञ विधि द्वारा ब्राह्मण बनना सुलभ हो जाता है, उसी प्रकार श्रीवैष्णव परिवार में जन्म लेने से पंच संस्कार विधि द्वारा श्रैवैष्णव बनना सुलभ हो जाता है। ब्राह्मण कुटुंभ के परिपेक्ष्य में यहाँ अधिक सुंदरता इस बात में है कि, श्रीवैष्णव अनुयायी बनने के लिए श्रीवैष्णव परिवार में जन्म लेने की आवश्यकता नहीं है - क्योंकी श्रीवैष्णवं आत्मा से संबंधित है, यद्यपि ब्राह्मण्यं शरीर से संबंधित है। जाति, समाज, देश, लिंग, आर्थिक स्थिति, कुटुम्भ आदि पर आधारित कोई भेद नहीं है - जो भी इस मोक्ष के मार्ग पर आने की इच्छा करता है, उसे इस पथ में सम्मिलित किया जा सकता है। श्रीवैष्णव बनने के उपरांत, देवांतर (ब्रह्म, शिव, दुर्गा, सुब्रह्मण्य, इंद्र, वरुण आदि देवी-देवता, जिनका नियंत्रण भगवान करते है) और उनसे संबंधित सभी वस्तुओं से संपूर्णतः संबंध त्याग करना श्रीवैष्णव के लिए बहुत आवश्यक है।

पंच संस्कार :

पंच संस्कार (समाश्रयं), किसी मनुष्य को कैंकर्य (इस संसार और परमपद) के लिए तैयार करने की परिशोधक प्रक्रिया है, जो शास्त्रों में समझायी गयी है। यह श्लोक, पंच संस्कार के विभिन्न पक्षों को समझाता है- ''तापः पुण्ड्रः तथा नामः मंत्रो यागश्च पंचमः''। इसके अंतर्गत निम्न पांच क्रियाओं का अनुसरण किया जाता है :

ताप - शंख-चक्र लांचन - हमारे कन्धों/बाहू पर शंख और चक्र की गर्म छाप। यह दर्शाता है कि हम भगवान की संपत्ति है - उसी प्रकार जैसे एक पात्र पर उसके स्वामी के चिह्न अंकित किये जाते है, हमें भगवान के चिह्नों से अंकित किया जाता है।

पुण्ड्र (चिह्न) - द्वादश ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करना - शरीर के द्वादश (12) स्थानों पर ऊर्ध्वपुण्ड्र (तिरुमण और श्रीचूर्ण) धारण करना।

नाम - दास्य नाम - आचार्य द्वारा प्रदत्त नया दास्य नाम (रामानुजदास, मधुरकविदास, श्रीवैष्णव दास)।

मंत्र - मंत्रोपदेश - आचार्य से रहस्य मंत्र का ज्ञान प्राप्त करना; मंत्र अर्थात वह जिसके ध्यान करने वाले को सभी दुखों से मुक्ति प्राप्त होती है - तिरुमंत्र, द्वयं और चरम श्लोक जो हमें संसार से मुक्ति प्रदान करते है।

याग - देव पूजा - तिरुवाराधना/पूजा विधि का ज्ञान प्राप्त करना।

योग्यतायें

अकिंचयम् (स्वयं को पूर्णतः असमर्थ/ अयोग्य/ अपात्र मानना) और अनन्य गतित्व (और कोई गति न होना), ये दो मुख्य शर्तें है, जो भगवान के प्रति समर्पण करने से पूर्व होना आवश्यक है। मात्र इसी स्थिति में, वह संपूर्णतः भगवान के प्रति समर्पित हो सकेगा और भगवान द्वारा स्वयं के उद्धार के लिए आश्वस्त होगा।

पंच संस्कार के उद्देश्य :

जैसा की शास्त्र कहते है, ''तत्व ज्ञानान् मोक्ष लाभः'' अर्थात ब्रह्म के विषय में सच्चा ज्ञान प्राप्त करके ही, मोक्ष प्राप्त होता है। आचार्य से अमूल्य अर्थ पंचक (ब्रह्मं-भगवान, जीवात्मा-आत्मा, उपाय-भगवान को प्राप्त करने के साधन, उपेय-लक्ष्य। परिणाम, विरोधी-उन लक्ष्य को प्राप्त करने में आने वाली बाधाएँ), जो मंत्र उपदेश का अंग है, इस विषय में ज्ञान प्राप्त करके हम चरम लक्ष्य अर्थात नित्य विभूति में श्रियःपति के प्रति कैंकर्य को प्राप्त करने के योग्य बन सकेंगे। सच्चा ज्ञान यह स्वीकार करना है कि हम संपूर्णतः भगवान के प्रति समर्पित/आश्रित है।

अपने आचार्य और श्रीवैष्णवों (अनेकों प्रकार से) के प्रति कैंकर्य करते रहना और अर्चावतार भगवान का घर में तिरुवाराधन द्वारा और दिव्य देशों में कैंकर्य करते रहना ही इस जीवन का उद्देश्य है।

इस महान संदेश को अन्य लोगों में उनके आध्यात्मिक लाभ के लिए प्रचार करना भी महत्वपूर्ण है। श्री रामानुज स्वामीजी, अपने मुख्य उपदेशों में, प्रथम हमें श्रीभाष्य, तिरुवाय्मोली सीखने और अन्य को भी सिखाने का आदेश करते है।

यहाँ, जीवात्मा और परमात्मा से दिव्य मिलन का प्रबंध आचार्य करते है। यद्यपि हमें समय-समय पर प्रपन्न भी कहा जाता है, परंतु सच्चे संदर्भ में, श्री रामानुज स्वामीजी और हमारे सभी पूर्वाचार्यों ने हमें समझाया है कि हम आचार्य निष्ठ है अर्थात जो संपूर्णतः आचार्य को समर्पित/आश्रित है। इस पंच संस्कार विधि को जीवात्मा के लिए सच्चा जन्म भी कहा जाता है, क्यों की इसी समय, जीवात्मा अपने सच्चे स्वरूप के विषय में ज्ञान प्राप्त करती है और भगवान के प्रति संपूर्ण समर्पण करती है। इस दिव्य संबंध के कारण, जो पति (परमात्मा) और पत्नी (जीवात्मा) के मध्य संबंधों के समान है, यहाँ अन्य देवताओं को जड़-मूल से त्यागने पर निरंतर महत्त्व दिया गया है।

इसलिए जैसा की यहाँ समझाया गया है, इस लौकिक संसार को त्यागकर, नित्य परमपद जाकर **श्रियःपति (श्रीमन्नारायण भगवान)** के प्रति अनवरत कैंकर्य करना ही श्रीवैष्णवता का सिद्धांत है।

पंच संस्कार विधि कौन निष्पादित कर सकता है?

यद्यपि श्रीवैष्णवं एक नित्य/अनादि सिद्धांत है, परंतु आल्वारों और आचार्यों ने इसे पुनर्जीवित किया है। श्री रामानुज स्वामीजी ने शास्त्र की शिक्षा प्राप्त की और समय के साथ लुप्त हो चुकी प्रथा को श्री नाथमुनि

स्वामीजी, आलवंदार आदि प्रधान आचार्यों के निर्देशों के आधार पर पुनःस्थापित किया। उन्होंने 74 आचार्यों को सिंहासनाधिपतियों (आचार्य) के रूप में स्थापित किया और उन्हें उन लोगों को पंच संस्कार करने के लिए अधिकृत किया जो इस जीवन के लक्ष्य/उद्देश्य (इस संसार को त्याग परमपद प्रस्थान करना) को समझते थे। उन 74 वंश में जन्म लेने वालों में से कोई भी पंच संस्कार प्रदान कर सकता है। श्री वरवरमुनि स्वामीजी ने कुछ विशिष्ट मठ और जीयर स्वामियों (संन्यासियों) को स्थापित किया। जिनके वंशज भी उन लोगों को पंच संस्कार प्रदान करने के लिए अधिकृत है जो श्रीवैष्णव बनने का लक्ष्य रखते है।

हमारे पंच संस्कार अथवा समाश्रयण के दिवस पर हमें क्या करना चाहिए?

1) प्रातः जल्दी उठाना।

2) श्रीमन्नारायण भगवान, आल्वारों और आचार्यों का ध्यान करना। यही हमारा सच्चा जन्म दिवस है- हमारे ज्ञान का जन्म।

3) नित्य कर्मानुष्ठान करना (स्नान, ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण, संध्या वंदन आदि)।

4) समय पर आचार्य मठ/मंदिर में पहुँचना चाहिए। कुछ फल, वस्त्र (भगवान/आचार्य के लिए वस्त्र), संभावना (धन) आदि जो भी संभव हो साथ लेकर जाना चाहिए।

5) समाश्रयण प्राप्त करना।

6) आचार्य का श्रीपाद तीर्थ स्वीकार करना।

7) ध्यान देकर आचार्य के निर्देशों को श्रवण करना।

8) मठ/मंदिर में ही प्रसाद पाना।

9) पूरा दिवस मठ/मंदिर में व्यतीत करना और जितना संभव हो प्रत्यक्ष आचार्य से संप्रदाय के विषय में समझना।

समाश्रयण के पश्चात व्यवसाय आदि पर जाने की शीघ्रता नहीं करना चाहिए - उस दिवस को शांति और सात्विकता के लिए संचित कर, गुरु परंपरा के प्रति कृतज्ञता प्रदर्शन करना चाहिए। श्रीवैष्णव के लिए यह दिन आने वाले ऐसे अनेकों मीमांसात्मक दिनों का प्रारंभ दिवस होना चाहिए।

पंच संस्कार प्रारंभ है अथवा अंत है?

यह सामान्य मिथ्याबोध है कि समाश्रयण मात्र एक साधारण रीति है और यही समापन है। परंतु यह पूर्णतः गलत है। यह श्रीवैष्णवं में हमारी यात्रा का प्रारंभ है। परम लक्ष्य अटल है (श्री महालक्ष्मीजी और श्रीमन्नारायण भगवान की नित्य सेवा में निरत होना) और प्रक्रिया हमारे पूर्वाचार्यों ने प्रदान की है - आचार्य द्वारा

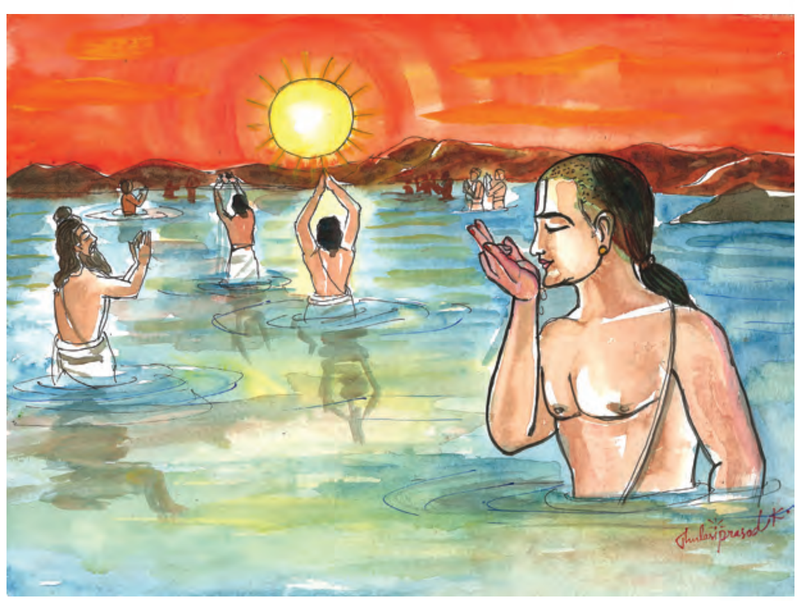

भगवान को साधना रूप स्वीकार करना और आचार्य द्वारा बताये गए सिद्धांतों को आनंदपूर्वक अनुसरण करना। प्रत्येक जीवात्मा के सच्चे स्वरूप के लिए सबसे उपयुक्त है, इस सिद्धांतों को स्वीकार करना, उन्हें अपने दैनिक जीवन में अनुसरण करना और मोक्ष प्राप्त करना।

मुमुक्षुप्पदी के सूत्र 116 में, पिळ्ळै लोकाचार्य बताते है कि श्रीवैष्णव को कैसे व्यवहार करना चाहिए (वह जिसने पंच संस्कार प्राप्त किये है)।

1) लौकिक विषयों के प्रति प्रीति को पूर्णतः त्यागना।

2) श्रीमन्नारायण भगवान को ही अपना एकमात्र उपाय मानना।

3) सच्चे लक्ष्य (नित्य कैंकर्य) के निष्पादन/कार्यसिद्धि में संपूर्ण श्रद्धा रखना।

4) सच्चे लक्ष्य को शीघ्रातिशीघ्र प्राप्त करने की निरंतर उत्कट अभिलाषा करना।

5) इस संसार में रहते हुए, सदा दिव्य देशों में भगवान के दिव्य गुणानुवादन और कैंकर्य में निरत रहना।

6) भगवान के परम स्नेही भक्त, जिनमें उपरोक्त वर्णित गुण निहित है, उनकी महानता को जानकार, उन्हें देखते ही आनंदित होना।

7) अपने मानस को तिरुमंत्र और द्वय महामंत्र पर दृढ करना।

8) अपने आचार्य के प्रति महान प्रीति रखना।

9) आचार्य और भगवान के प्रति कृतज्ञ रहना।

10) सात्विक श्रीवैष्णवों का संग करना, जो सच्चे ज्ञान से परिपूर्ण, विरक्त और शांत स्वभाव वाले है।

इस समय, हमें भगवत श्री रामानुज स्वामीजी के प्रति भी कृतज्ञ होना चाहिए, जिन्होंने इस पंच संस्कार विधि को भव्य शैली में संस्थागत किया और अपने अनेकों अनुयायियों (74 सिंहासनाधिपति) के द्वारा उसका प्रचार किया। यह सब उन्होंने जीवात्माओं के प्रति अपनी अपरिमित कृपा के कारण किया, जो इस लौकिक संसार में अंधकार में घिरे हुए है और भगवान के प्रति मंगलाशासन करने के अपने स्वाभाविक कर्तव्य से वंचित है। इस तत्व के विषय में और अधिक हम अगले अंकों में देखेंगे।

क्रमशः

नीति पद्यम्

आन्ध्र देश के कबीर श्री वेमना

(संत वेमना की कुछ चयनित पद्य)

मिथ्याडंबर

संध्यवार्व नेमि जपमु सेयगनेमि?
वेदशास्त्रमुलनु वेलयनेमि?
परमु गननि वाडु बापडु गाडुरा
विश्वदाभिरामा विनुरवेमा ।।23।।

वेमना का दृढ़ निश्चय है कि पर-तत्व का दर्शन करने वाला ही सच्चा ब्राह्मण है। जब तक देह-स्थित परमात्मा का ज्ञान प्राप्त नहीं करे, वे सब संध्यावंदना, जप, वेदाध्ययन आदि निष्फल हैं।

1) श्रीवेंकटेश्वरस्वामीजी को हरदिन नए मिट्टी के बर्तन में क्यों भोग चढ़ाया जाता है?

स) एक समय भीम नामक एक कुम्हार मिट्टी से बने तुलसीदल से भगवान का नित्य पूजा करता था। राजा तोंडमान स्वामी की पूजा सोने के तुलसीदल से करते थे। एक बार राजा ने सोने के गोले के नीचे मिट्टी के कटोरे देखे और स्वामी से पूछा कि क्या मैं सोने के कटोरे से पूजा कर रहा हूँ, इन मिट्टी के कटोरे से कौन पूजा कर रहा है, इस पर स्वामी ने कहा कि ये भीम नाम के एक पवित्र कुम्हार द्वारा, उन्हें अर्पित की गई मिट्टी की तुलसी की गेंदे मुझे बहुत प्रिय और पवित्र हैं। राजा तोंडमान भीम की भक्ति की परीक्षा लेना चाहते थे और उनके निवास पर चले गये। वहाँ भीम किसी और ध्यान के बारे में सोच रहे थे परन्तु उनका मन स्वामी में ही लगा हुआ था। यह याद रखते हुए बर्तन बनाने से पहले उन्होंने स्वामी पैरों के पास मिट्टी से बने तुलसीदल रखे। वह अपनी शक्ति और भक्ति का स्वामी है। उन्होंने प्रणाम किया और काम शुरू कर दिया। इसके अलावा, वह हर दिन चावल खाने से पहले एक नए कटोरे में भोजन भगवान को अर्पित करते थे और खुद खाते थे। भीम की भक्ति से प्रसन्न होकर स्वामी प्रकट हुए। उन्होंने उसे शारीरिक रूप से मुक्ति प्रदान की। इसलिए आज भी आनंदनिलय में भगवान को पहली नैवेद्य नया पात्र में डालने की प्रथा है। भक्तों का मानना है कि स्वामी इसे मुख्यतः प्रेम से ग्रहण करते हैं।

2) क्या कारण है कि द्वापरयुग में यशोदा देवी ने कलियुग में वकुला ने भगवान वेंकटेश्वर का विवाह किया था?

स) भगवान कृष्ण देवकी-वसुदेव के पुत्र, यशोदा के घर पर बड़ा हुआ। लेकिन 12 साल की उम्र में, कृष्ण कंस संहार केलिए मधुरानगर चलें गए और अपनी शिक्षा और शादी के बाद वह अपनी पत्नियों के साथ माँ के पास आगए। यशोदा, जिन्होंने कृष्ण को देखा जो आठ पत्नियों के साथ आए थे, मैं वह माँ थी जिसने मुझे दूध पिलाया, सभी चुंबन देखे, लेखिन एक भी विवाह देखने केलिए मुझे नहीं बुलाया। क्या हुआ कृष्णा! उसने पूछा! माँ! आप 'मेरी शादी सिर्फ देखना नहीं लेकिन एक वार्ताकार के रूप में मेरे साथ इसे आयोजित करने का सौभाग्य आपको मिलेगा। जब मैं कलियुग में श्रीनिवास के रूप में पृथ्वी पर प्रकट हुआ तो आपने वकुलामाता के रूप में मेरी माँ होकर मेरा विवाह संपन्न कर सकता है इस प्रकार वर प्रदान किया। इसलिए द्वापरयुग की यशोदा देवी कलियुग में श्रीनिवास की माँ थीं। सफलतापूर्वक पद्मावती श्रीनिवास का विवाह संचालन किया।

3) 'वातापी पाचन' बताएँ कि वातापी पाचन क्यों होता है?

स) पूर्वकाल में वातापी और इल्वल नाम के दो राक्षस थे। वे जंगलों में रहते हैं। उनकी इच्छा हर दिन नरभक्षी खाने की होती है। लेकिन वातापी कामरूपविद्या को जानता है और इल्वल मृतसंजीवनीविद्या को जानता है। इसलिए उन्होंने एक योजना सोची। इल्वल प्रतिदिन जंगल से गुजरानेवालों के पास जाती थी और उनसे अपने पिता के लिए भोक्ता बनकर आने को कहती थी। इस बीच वातापी कामरूपविद्या

सितंबर 2023

०६. श्रीकृष्णाष्टमी
०७. गोकुलाष्टमी
१७. श्री बलराम जयंती, श्री वराह जयंती
१८. श्री गणेश चतुर्थी
१८ से २६ तक तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
२२. तिरुमल श्री बालाजी का गरुडसेवा
२६. श्री वामन जयंती
२६ से २९ तक तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का पवित्रोत्सव
२८. श्री अनंतपद्मनाभव्रत
३०. महालय पक्ष प्रारंभ

के माध्यम से एक बकरी बन जाएगी इल्वल अपने साथ आए लोगों के लिए खाने के साथ बकरी भी पकाते थे। उनके खाने के बाद मृतसंजीवनीविद्या के माध्यम से वातापी को पुनर्जीवित करें और वातापी आए। वातापी उनका पेट फाड़कर बाहर निकल आते थे। मृतक को दोनों एक साथ खाना खाते थे। यह रोज होता है। एक दिन अगस्त्य उस रास्ते से जा रहे थे और इल्वल ने उन्हें रात के खाने के लिए बुलाया। उसने हमेशा की तरह वातापी पकाया। अगस्त्य जो अपनी दूरदर्शिता से मामले को जानते थे। भोजन के बाद अपच से पीड़ित थे। वातापि पाचन! उन्होंने कहा! फिर इल्वल वातापि बाहर आओ! उन्होंने कहा! और कहाँ? अगस्त्य ने भोजन के बाद कहाँ है वातापी! मेरे पेट में जीर्ण होगया। क्रोधित इल्वल ने अपना राक्षस रूप दिखाया और अगस्त्य ने उसे जला दिया। इसीलिए जब छोटे बच्चों को कोई भी भोजन दिया जाता है तो वह उनके पेट पर लिखा होता है और पच जाता है। वातापी पाचन। हमारे बुजुर्ग कहते है राक्षस होते हुए भी अगस्त्य शब्द से जीर्ण होगया। इसलिए बडे लोग चाहते है कि बच्चों द्वारा खाया गया भोजन जल्दी पच जाए और उन्हें ताकतवर (शक्तिवंत) बनाए। इस शब्द का अंतिम अर्थ है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

1. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, देव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।
2. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।
3. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।
4. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'
5. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।
6. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।
7. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति – 517 501. चित्तूर जिला।

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

अध्याय - 10

मित्रवर्मा के पुत्र के रूप में आकाशराजा का जन्म

(वराह पु. भाग 2, अध्याय 3, श्लो. 12-38)

श्रीवराह ने भूदेवी से एक बार इस प्रकार कहा- ''चतुर्युगों के क्रम में अट्ठाईसवाँ चतुर्युग क्रम चल रहा था। उसके अंतिम चरण में महाभारत युद्ध समाप्त हुआ। उससे द्वापरयुग का अंत और कलियुग का आरंभ भी हो गया। कलियुग में विक्रमार्क शक में शूद्रक और अन्य राजाओं ने शासन किया। उनमें से किसी ने भी मुझे पहचाना नहीं। सब स्वर्ग लोक सिधारे। इसके बाद चंद्रवंश में मित्रवर्मा नामक राजा का जन्म हुआ। वे महारथी बने। उन्होंने तोंडमंडलम् क्षेत्र पर शासन किया। नारायणपुर उनकी राजधानी थी। उन्होंने पांड्य राजकुमारी से विवाह किया। उनके पुत्र ही थे आकाशराजा। आकाशराजा का धरणी नामक शक राजकुमारी से विवाह हुआ। उपयुक्त समय पर राजा मित्रवर्मा ने अपने पुत्र आकाशराजा को राज्यासन दिया। राजा स्वयं पत्नी समेत वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण कर वेंकटाद्रि पर तपस्या के लिए पहुँचे। आकाशराजा तब सम्राट बने।

बहुत समय तक आकाशराजा की कोई संतान नहीं हुई। पुत्र की कामना से पुत्रकामेष्ठि यज्ञ करने का उन्होंने निश्चय किया। उसके लिए पहले जमीन को जोतना था। आरणी नदी के किनारे पर यज्ञ के लिए सोने के हल से जोत कर नवधान्य (नौ प्रकार के बीज) बोने की प्रक्रिया में कार्यरत थे। जब नवधान्य बो रहे थे तब राजा ने एक सोने की पेटी में सुवर्ण सहस्रदल कमल में एक सुंदर बालिका को देखा। पहले वे आश्चर्यचकित हो गये। क्षणों में उनकी आँखों से आनंदभाष्प बरस पडे। ''यह बच्ची मेरी है। भगवान ने कृपा भाव से मुझे इस बच्ची को दिया है।'' - कहते हुए बच्ची को हाथों में लिया। उसी समय आकाशवाणी सुनायी पडी- ''हे राजन्! वास्तव में यह बच्ची आप की ही है। उसका संरक्षण कीजिए।'' राजा ने बच्ची को आनंद के साथ रानी धरणी देवी के हाथों में सौंपा। बच्ची को सुवर्ण पद्म में पाने के कारण बेटी को 'पद्मावती' नाम दिया गया।

कुछ ही समय बाद रानी धरणी देवी गर्भवती हुई। एक पुत्र को जन्म दिया। यह राजा के लिए और आनंद की बात ही थी। गायों को दान में दिये। धार्मिक अनुष्ठान किये। पुत्र का नाम रखा 'वसुदास'।

कुछ वर्ष बीते। पद्मावती युवती बनी। एक दिन वे अपनी सखियों के साथ - उद्यान वन में घूम रही थीं। उसी समय नारद मुनि उधर से गुजर रहे थे। उन्होंने पद्मावती को देखा। उनके उज्ज्वल सौंदर्य को देखकर अभिभूत हुए। उनके पास पहुँचकर उनके माता-पिता के बारे में पूछा। उनकी हस्तरेखाएँ देखीं। आश्चर्यचकित हो गये। तब नारद जी ने पद्मावती से कहा- ''तुम्हारा वर्छस्व बहुत ही आकर्षक है। तुम्हारी शारीरिक आभा अतुलनीय है। श्रीलक्ष्मी समान दिखाई दे रही हो। तुम्हें अवश्य श्रीमन्नारायण ही पति के रूप में मिलेंगे।'' नारद जी चले गये।

पद्मावती ने अपनी सखियों से फूल चुनने के लिए कहा था। सखियाँ फूल इकट्ठा कर रही थीं। उन्होंने उस समय देखा कि एक बहुत बडा मस्त हाथी जो हथिनों के संग में विहर रहा था, अकस्मात् उस बगीचे में घुस आया। पद्मावती की सखियाँ भयभीत हो गयीं। एक बडे वृक्ष के पीछे छिप गयीं। उसी समय उन लोगों ने देखा कि एक धवल अश्व पर एक सुंदर युवक सवार होकर उस ओर आया। उसके एक हाथ में सारंग (धनुष) था और दूसरे हाथ में बाण थे। वह पीतांबरधारी था। शरीर पर यज्ञोपवीत शोभित था। स्वर्ण आभरण पहना हुआ था। वह मस्त हाथी के पीछे-पीछे आया। उस युवक को देख हाथी भाग गया। अश्वारोही ने पद्मावती की सखियों के पास जाकर पूछा कि क्या उन्होंने किसी मृग (ईहा मृग) को इस ओर जाते देखा? उनका उत्तर था- 'नहीं'। उन्होंने उस युवक से प्रश्न किया कि ''क्यों तुम राजा के उपवन में घुस आये? इसमें आखेटकों का प्रवेश निषिद्ध है।''

युवक घोडे से उतरा। उनसे पूछा- ''तुम लोग कौन हो? वहाँ एक कोने में बैठी युवती कौन हैं?'' सखियों ने कहा- ''वे राजकुमारी हैं। आकाशराजा की पुत्री हैं। आकाशराजा इस प्रांत के राजा हैं। हम स्वयं राजकुमारी की सखियाँ हैं। लेकिन आप कौन हैं? आपका नाम क्या है? किस वंश के हो? आपके माता-पिता कौन हैं? जरा बताइए।''

इस पर घुडसवार युवक ने उत्तर दिया- ''मैं सूर्यवंशी हूँ। मेरे अनेक नाम हैं। मेरे सब नाम मनुष्यों को पवित्र बनाने की शक्ति रखते हैं। मेरे शरीर का रंग श्याम है। इसीलिए मैं कृष्ण कहलाता हूँ। मेरा एक शंख है। वह अपनी शक्ति से शत्रुओं को भयभीत करता है। मेरे पास चक्र है। वह शत्रुओं का नाश करता है। मेरा धनुष तो अनुपम शक्ति समन्वित है। मैं विश्ववीर हूँ। मैं वेंकटाद्रि पर रहता हूँ। कुछ सहायकों के साथ मैं आखेट के लिए निकला तो मेरे सामने एक भयंकर भेड आया। उसका पीछा करता करता मैं अकेला यहाँ तक पहुँच गया हूँ। मैं यहाँ एक सुन्दर और मणिकान्ति सम प्रकाश बिखेरनेवाली इस युवती पद्मावती को देखकर तुम लोगों के पास आया हूँ। तुम लोगों से यही पूछना चाहता हूँ कि क्या मैं उससे विवाह कर सकता हूँ। मैं उसको पूर्ण मन से चाहता हूँ।''

पद्मावती की सखियों ने उनके प्रस्ताव पर रुष्ट होकर चेतावनी दी कि अगर राजा को यह समाचार मिलेगा तो वे उसे कठिन दंड देंगे। उन लोगों ने युवक से तुरंत वहाँ से निकल जाने के लिए कहा- 'अगर नहीं निकले तो परिणाम अच्छे नहीं रहेंगे' - यह उन लोगों की आखरी बात थी। वह मानो डर रहा हो, ऐसा चेहरा दिखाकर श्रीनिवास वेंकटाद्रि लौटा। वहाँ पहुँचकर, जो सहायकों के रूप में आखेट में उनका साथ दिया था, उन देवताओं को वापस जाने के लिए कहा। वे मणिमंटप में गये। पद्मावती को मन में रखकर खाट पर लेट गये। सोचने लगे कि वे लक्ष्मी ही हैं और कोई हो नहीं सकतीं। वे अवश्य क्षीराब्धि तनया ही हैं।

वकुलामाता, जो श्रीनिवास की सेविका बनकर आयी थी, वह श्रीनिवास के लिए मध्याह्न का भोजन लेकर आयी। श्रीनिवास ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। वकुलामाता के पूछने पर उन्होंने एक और गाथा का वर्णन किया। उस संदर्भ में उन्होंने कहा- ''त्रेतायुग में देवताओं की प्रार्थना पर राक्षसों के संहार के लिए मैं ने दशरथ पुत्र राम के रूप में अवतार लिया था। उस समय वेदवती नामक एक पवित्र महिला ने सीता की सहायता की थी। सीता तो श्री महालक्ष्मी का ही अवतार है। जनक सुता बनकर पृथ्वी पर आयीं। जब हम वनवास में थे तब एक दिन मारीच नामक राक्षस सुवर्ण मृग बनकर आश्रम के पास विचरण कर रहा था। वह हमें धोखा देने के लिए ही आया था। सीता ने सोने का हिरण चाहा। मुझसे कहा कि मैं जाकर उसे पकडकर लाऊँ। मैं ने उसे पकडने की कोशिश की। वह दौडकर भागा। उसे मारने के लिए मैं ने बाण छोड़ा। बाण राक्षस मारीच को लगा। मारीच ने ''हा लक्ष्मण! हा लक्ष्मण!'' कहकर जोर से चिल्लाया। सीता ने उस समय सोचा कि मैं कष्ट में हूँ और मेरे प्राण खतरे में हैं। मारीच ने कंठ बदलकर मेरे सुर में चिल्लाया था। सीता ने समझा कि मैं ही चिल्ला रहा हूँ। लक्ष्मण ने यद्यपि कहा ही था कि मुझे कोई हानि नहीं पहुँचा सकेगा, फिर भी सीता ने लक्षण को मेरी रक्षा के लिए भेजा। तब सीता आश्रम में अकेली पड गयीं। रावण उनके सामने संन्यासी के रूप में आया तथा भिक्षा माँगी। उसका लक्ष्य सीता का हरण ही था। अग्निदेव ने उस समय सीता को पाताल लोक में पहुँचाया। अपनी पत्नी स्वाहा देवी के संरक्षण में रखकर आश्रम में सीता की छायामूर्ति को बनाया। रावण ने सीता की छायामूर्ति को ही असली सीता समझा और उन्हें लंका ले गया। वहाँ उन्हें बन्दी बनाया। छायामूर्ति को अनेक प्रकार से तंग किया। वास्तव में वह छायामूर्ति ही वेदवती थी। जब छायामूर्ति सीता की रक्षा कर मैं वापस लाया तब वे अग्नि परीक्षा निमित्त आग की चिति में गयी। अग्निदेव ने पाताल से स्वाहा देवी के आश्रय में रहनेवाली असली सीता को लाकर मुझे अर्पित किया। तब सीता ने मुझसे प्रार्थना स्वर में कहा कि मैं वेदवती को ग्रहण करूँ, क्योंकि उन्होंने सीता के लिए रावण से कष्ट सहे। वे सीता ही बनकर रहीं। उनसे भी सीता ने इसी प्रकार की बात कही। तब मैं ने उत्तर में कहा था कि मैं इस अवतार में एक पत्नीव्रत हूँ। उसे स्वीकार कर नहीं सकता। लेकिन सती वेदवती ब्रह्मलोक में रहेंगी। देवताओं की पूजाएँ स्वीकारती हुई अट्ठाईसवें कलियुग तक रहेंगी। मैं अट्ठाईसवें कलियुग में वेंकटेश्वर के रूप में अवतार लूँगा। उस समय वेदवती भी आकाशराजा की पुत्री पद्मावती के रूप में अवतरित होंगी। तब ही मैं उन्हें स्वीकार कर सकता हूँ। अब वह समय आ गया है। पद्मावती अवतरित हुईं। उन्हीं को मैं ने आकाशराजा के उपवन में देखा है। मैं उनके सौंदर्य पर आकर्षित हो गया हूँ। उनके बिना मैं रह नहीं सकता, जी नहीं सकता। अतः अब आपको प्रयत्नशील होना है। हमारा विवाह संपन्न कराना है।''

क्रमशः

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

नल्लार् परवु मिरामानुजन्, तिरुनामम् नम्ब
वल्लार् तिरत्तै मरवादवर्हळ् यवर्, अवर्क्के
एल्लाविडत्तिलु मेन्नु मेप्पोदिलु मेत्तोळुम्बुम्
शोल्लाल् मनत्ताल् करुमत्तिनाल् शेय्वन् शोर्विन्निये ॥८०॥

सत्पुरुषसंसेव्यमानभगवद्रामानुजदिव्यनामसंकीर्तनतत्पराणां प्रभावं ये तावदविस्मरन्तो नित्यमनुध्यायन्ति तादृशां महतामेव विषये सर्वेषु देशेषु सर्वावस्थासु सर्वेष्वपि च कालेषु सर्वविधान्यपि कैंकर्याणि मनोवाक्कायतः क्रियासं निस्तन्द्र एव सन्।

सत्पुरुषों से सेवित श्री रामानुजस्वामीजी के शुभ नामों का ही संकीर्तन करनेवालों के प्रभाव का, जो भूले बिना, सदा ध्यान करते हैं, ऐसे श्री रामानुज भक्त-भक्तों का ही, मैं आलस्य छोडकर सर्वदेश, सर्वावस्था और सर्वकालों में भी, वाचा, मनसा और कर्मणा सकलविध कैंकर्य करूँ।

सर्वदेश, सर्वावस्था और सर्वकालों में श्री रामानुज स्वामीजी के भक्तों का वाचा, मनसा और कर्मणा से सकलविध कैंकर्य करना चाहिये।

क्रमशः

"श्रीनिवास चतुर्वेद हवन"

यज्ञ या याग हिन्दु संप्रदाय में एक विशिष्ट वैदिक प्रक्रिया है। हिन्दू संप्रदाय में पुरातन काल से यज्ञ को आयोजित करने की तरीका है। विविध देवता मूर्तियों को संतुष्ट करने के लिए यज्ञ के माध्यम से कुछ वस्तुएँ को समर्पित करना ही यज्ञ है। इस यज्ञ को याग, क्रतु, हवन जैसे विविध नामों से भी पुकारते है। यज्ञ करने केलिए अनेक नियम व संप्रदाय है। हमारे पूर्वज यह यज्ञ व याग निर्वहण करने के अंतर्गत शास्त्रीय कारण भी है। स्वास्थ्य व शांति के लिए और विविध समस्याओं का निवारणार्थ के अंतर्गत यह यज्ञ को आयोजित किया जाता है। स्वस्थ आहार की आदतें, योग, शारीरिक गतिविधि, स्वस्थ जीवन शैली और याग भी स्वस्थ जीवन को उपयुक्त बन जाता है। याग करते समय में मंत्र पठन से अंतर्निहित शक्ति जागृति होती है।

लोक कल्याणार्थ तिरुपति में स्थित ति.ति.दे. प्रशासनिक भवन प्रांगण के अंगन में दि.29-06-2023 से दि.05-07-2023 तक 'श्रीनिवास चतुर्वेद हवन' को शास्त्रोक्त, वेदमंत्र पूर्वक अत्यंत वैभवोपेत ढंग से संपन्न किया गया। इस यज्ञ को ति.ति.दे. श्री वेंकटेश्वर उच्च वेदाध्ययन संस्था और हिन्दू धार्मिक संस्था के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 32 ऋत्त्विक, कलश स्थापन, कलश आवाहन तदनंतर पूजा, भक्त संकल्प, अग्नि प्रतिष्ठा कार्यक्रम, चार वेदों के मंत्र से यज्ञ को आयोजित किया गया।

दि.29.06.2023 से दि.05.07.2023 तक विश्वशांति के लिए तिरुपति में स्थित ति.ति.दे. प्रशासनिक भवन के प्रांगण में 'श्रीनिवास चतुर्वेद हवन' यज्ञ कार्यक्रमों को ति.ति.दे. ने आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. के ई.ओ. श्री ए.वी.धमरिड्डी, आई.डी.ई.एस., न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी, जे.ई.ओ. श्रीमती सदा भार्गवी, आई.ए.एस., और ति.ति.दे. के आदि उच्च पदाधिकारीगण ने भाग लिया।

इस साप्ताहिक यज्ञ कार्यक्रम में विविध संगीत, नृत्य, आध्यात्मिक भाषण आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम को आयोजित किया गया है। भक्तगण भी अधिक संख्या में भाग ले कर, भगवान जी का आशीर्वाद प्राप्त किये थे।

दि.22.06.2023 को तिरुमल बालाजी के दर्शनार्थ सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री वी.रामसुब्रह्मणियन अपने परिवार के साथ भगवान जी को दर्शन कर लिया है। इस संदर्भ में अर्चकों ने वेदाशिर्वचन दिया तदनंतर ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष जी ने तीर्थ-प्रसादों को सौंप दिया है।

दि.07.06.2023 को महाराष्ट्र राज्य, नवी मुंबाई प्रांत में ति.ति.दे. के द्वारा नूतन निर्मित श्री बालाजी मंदिर के भूमि पूजा महोत्सव कार्यक्रम में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री माननीय श्री एकनाथ षिंडे, ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी, ति.ति.दे. के ई.ओ. श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस., ति.ति.दे. के न्यास-मंडली के अन्य सदस्य, महाराष्ट्र सरकार के अधिकारीगण के साथ ति.ति.दे. के उच्च पदाधिकारीगण ने भाग लिया।

दि.14.06.2023 को तिरुमल घाट-रोड में आपदा के निवारणार्थ महाशांति होमम् को ति.ति.दे. ने आयोजित किया है। डौन घाट रोड सातवाँ मैल में श्री प्रसन्नांजनेय स्वामी (हनुमान) विग्रह के पास निर्वहण करते हुए होमम् कार्यक्रम में ति.ति.दे. के ई.ओ. ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में मंदिर के अधिकारीगण, ऋत्विक और अर्चक स्वामीजी ने भाग लिया।

दि.30.06.2023 को ति.ति.दे. के संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारिणी श्रीमती सदा भार्गवी, आई.ए.एस., (एच व ई) स्विम्स आस्पताल के निदेशक और कुलपति के पद का कार्यभार को स्वीकारते हुए दृश्य।

श्री प्रपन्नामृतम्

(44वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

(गतांक से)

पश्चिम दिशा में प्रस्थान

भगवान श्रीरंगनाथ ने यमराज की प्रार्थना सुनकर उसको सन्तुष्ट करने के लिये दक्षिण भारत के चोलमंडल के दक्षिण चित्रकूट नामक नगर में अपनी विचित्र लीला के द्वारा एक महा बलवान राजा को उत्पन्न किया। जो कृमिकण्ठ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह दुर्जन, श्रीवैष्णव द्वेषी, भगवान श्रीमन्नारायण का निन्दक था, और श्रीवैष्णव धर्म से इसको बड़ा विरोध था। इसने अपने पुरोहित के द्वारा दूर-दूर से बहुत से वैदिक विद्वानों को बुलाकर उनसे जबरदस्ती ऐसा लिखवाया कि- ''वैष्णवत्व वेद-शास्त्र सम्मत प्रसिद्ध तत्व नहीं है।'' बलपूर्वक विद्वानों से सम्मति-पत्र पर हस्ताक्षर कराकर इस आदेश का उसने सर्वत्र प्रचार करवाया और राजाज्ञा द्वारा ऐसा घोषित कर दिया कि- ''जो भी वैष्णवत्व का आचरण करेगा उसको कठिन दण्ड दिया जायेगा।'' इस कठोर राजादेश से घबराकर अनेकों वैदिक विद्वान अपने गृह, भूमि, धन, धान्य और पशुओं को त्यागकर चोलदेश से अन्यत्र चले गये और अनेक लोगों ने घबराकर प्रच्छन्न रूप से स्वधर्म का पालन करते हुए प्रत्यक्ष डर के मारे राजकीय घोषणा का कुछ भी विरोध नहीं किया। फिर एक विद्वान् ने इस घोषणा का स्पष्ट रूप से विरोध करते हुए चोलराज से यह कहा कि- ''यतिराज श्री रामानुजाचार्य जो कि श्रीभाष्यकार के नाम से विख्यात हैं वे श्रीरंगम् में निवास करते हैं।

उनका परम कृपापात्र शिष्य श्री कूरेशाचार्य महा विद्वान् एवं सभी विद्वानों में श्रेष्ठ है। पहले तुम उनसे हस्ताक्षर करवाओं, इसके बाद में मैं अपने हस्ताक्षर करूँगा।'' यह सुनकर राजा के मंत्रि परिषद् के एक सदस्य ने (जो कूरेशाचार्य के शिष्य थे) राजा से निवेदन किया कि इन साधारण श्रीवैष्णवों के हस्ताक्षरों से कुछ भी फल प्राप्त नहीं होगा। किन्तु यतिराज श्री रामानुजाचार्य और उनका प्रिय शिष्य कूरेशाचार्य इस घोषणा की स्वीकृति पर हस्ताक्षर कर दें तभी आपका मनोरथ पूर्ण हो सकेगा। उक्त दोनों महानुभावों के द्वारा लिखित लेख त्रैलोक्य में भी मान्य होगा।

मंत्रि परिषद् के सदस्य चतुरग्राम स्वामी श्रीवैष्णव ब्राह्मण के वचनों को सुनकर चोलराजा ने तत्काल ही यतिराज श्री रामानुजाचार्य और श्री कूरेशाचार्यजी को

लाने के लिये अपने दूतों को श्रीरंगम् भेज दिया। दूत जिस समय यतिराज के मठ में पहुँचे तब यतिराज अपने शिष्य श्रीवत्सचिह्न मिश्र के साथ में कावेरी तट पर स्नान के लिये गये हुए थे। दूतों के मुख से राजाज्ञा को सुनते ही आचार्य का कोई अनिष्ट न हो, यह विचारकर श्री कूरेशाचार्य ने यतिराज के काषायवस्त्र और दण्ड कमण्डलु धारण कर बिना यतिराज की आज्ञा के ही राजा के दूतों के साथ हो लिये। यह देखकर श्री पूर्णाचार्यजी भी शीघ्रतापूर्वक उनके पीछे चल दिये।

शिष्यों ने यतिराज से प्रार्थना की कि- ''चोलराज बड़ा अत्याचारी है। अब आपके यहाँ निवास करने से संघर्ष और भी अधिक बढ़ेगा। अतः अब आपका यहाँ रहना ठीक नहीं है।'' शिष्यों के द्वारा कहे गये वचन और वहाँ की स्थिति पर विचार करके यतिराज श्री रामानुजाचार्य श्रीरंगनाथ भगवान

से आज्ञा लेकर पश्चिम दिशा के लिये प्रस्थित हो गये।

यतिराज श्री रामानुजाचार्य-भयंकर जंगली मार्ग में 6 दिन और 6 रात्रि निरंतर चलते हुये वर्षा एवं भयंकर हवा का सामना कर अंत में एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ एक छोटा-सा गाँव था। वहाँ पहुँचकर पूछा कि- ''यह मार्ग किधर जाता है?'' भूख-प्यास और शीत से पीड़ित वहाँ के लोगों ने आपको देखकर अग्नि के समीप बैठने का संकेत किया, और फिर कुछ समय बाद उन जंगली लोगों ने आपको नवीन स्वच्छ वस्त्र पहनने को दिये तथा सम्मान करते हुये इस भयंकर जंगल में आगमन का कारण और परिचय पूछा। तब यतिराज के शिष्यों ने उन बनवासियों को बताया कि हम श्रीरंगम् में रहते हैं और किसी विशेष कारणवश इस जंगल में आये है। श्रीरंगम् का नाम सुनते ही ये बनवासी बड़े प्रसन्न हुये और उन्होंने पूछा कि- ''श्रीरंगम् में यतिराज श्री रामानुजाचार्य तो प्रसन्न हैं?'' विस्मित होकर श्रीवैष्णवों ने यतिराज की तरफ देखा और फिर उन बनवासी लोगों से पूछा कि- ''आप लोग यतिराज के नाम से कैसे परिचित हैं?'' तब फिर उन लोगों ने बतलाया कि नदी के प्रवाह में बहकर आते हुये शंख, चक्र, तिलक आदि से चिह्नित शव को देखकर जिन यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने दयापूर्वक उसका दाह-संस्कार किया था, और तब श्री वरदराज भगवान ने जिनका महत्त्व बताया था। वे ही हितोपदेश करते समय हमारे आचार्य श्रीनल्लानाचार्य ने हमसे कहा था कि आपके परमाचार्य यतिराज श्री रामानुजाचार्य हैं। अतः उनके चरणकमलों को ही आप लोग

अपना रक्षक मानें। तब से हम यतिराज के नाम से परिचित हैं। इस प्रकार कहने पर उन व्याधों को यतिराज के शिष्यों ने यह कहते हुये दर्शन कराये कि यही यतिराज श्री रामानुजाचार्य हैं।

जिस तरह भगवान श्रीराम के दर्शनों से केवट भीलों की परमानन्द की प्राप्ति हुई थी, वैसे ही परमाचार्य यतिराज के दर्शन करके इन जंगली लोगों को बड़ी प्रसन्नता हुई, और सबने प्रेमपूर्वक अत्यन्त भक्ति के साथ साष्टांग प्रणाम करके दर्शनों से विह्वल होकर अनेकों प्रकार के जंगली फल एवं मधु आदि आपकी सेवा में निवेदित करते हुए अपना अहोभाग्य माना। यतिराज ने बनवासी लोगों का प्रेम देखकर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और मुस्कुराते हुये अपने शिष्यों से कहा कि नल्लानरूपी मेघ इस भंयकर जंगल में भी बरस गया है। अर्थात् इन जंगली लोगों में भी नल्लान ने ऐसा भाव भर दिया।

तदनन्तर यतिराज ने शिष्य समुदाय के साथ इन भक्त व्याध लोगों के द्वारा समर्पित मधुमिश्रित अन्न का प्रेमपूर्वक भोजन करके वहीं पर विश्राम किया।

व्याधों ने अपने संघ के एक आदमी को यतिराज का संदेश एवं समस्त वृत्तान्त समझाकर वहाँ के समाचार लाने के लिये श्रीरंगम् भेज दिया।

यतिराज अपने आचार्य श्रीमहापूर्ण और प्रिय शिष्य कूरेश (जो कृमिकंठ राजा के यहाँ गये थे) के संबंध में समाचार जानने के लिये अत्यन्त उत्सुक थे। तदनंतर यहाँ से प्रस्थान करके आप आपने 45 प्रिय शिष्यों के साथ उस स्थान से दो कोस दूरी पर स्थित एक गाँव में आये, वहाँ पर भी कुछ श्रीवैष्णव भील निवास करते थे। इस समय में ये भील लोग शिकार करने के लिये बन में गये हुये थे, अतः आप एक भक्त भील के घर पर ठहर गये।

जब गाँव के लोग शिकार से वापस आये तो यतिराज के दर्शन कर साष्टांग प्रणाम करके बहुत प्रसन्न हुये और मन में विचार किया कि ये श्रीवैष्णव ब्राह्मण हमारे घर पर तो भोजन करेंगे नहीं, अतः इनके भोजन की व्यवस्था करनी चाहिये। ऐसा विचार करके वे भील लोग समीप के एक गाँव में गये और वहाँ पर एक ब्राह्मण के घर पर जाकर उनके यहाँ उत्तम भोजन बनाने की सामग्री-चावल, दाल, दूध, दही, साग और घृत आदि वहाँ पर भिजवाये, जहाँ पर यतिराज निवास कर रहे थे। ब्राह्मणों ने विधिपूर्वक भोजन बनाकर भगवान को भोग लगाने के बाद यतिराज एवं उनके शिष्यों से प्रार्थना की। जिसको स्वीकार कर सबने प्रेमपूर्वक भोजन ग्रहण किया।

।। श्री प्रपन्नामृत का 44वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ।।

क्रमशः

श्री वेंकटेश्वर परब्रह्मणे नमः

हिन्दू होने के नाते गर्व कीजिए!

* ललाट पर अपने इच्छानुसार (चंदन, भस्म, नामम्, कुंकुम) तिलक का धारण करें।
* नहाने के बाद निम्न भगवन्नामों में से किसी एक का एक पर्याय में १०८ बार जप करें।

श्री वेंकटेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो नारायणाय।

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

39) तिरुपार्त्तन पळ्ळि (तिरुनांगूर)

यह दिव्य क्षेत्र शीरकाळि रेल्वे-स्टेशन से 14 कि.मी. की दूरी पर है। चेन्नै-तिरुच्ची मेइन लाइन में। चेन्नै से शियाळि 261 कि.मी. पर है।

मूलमूर्ति - तामरैयाळ केळवन - पश्चिमाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

उत्सवर - पार्थसारथि।

तायार (माताजी) - तामरै नायकी।

तीर्थ - शंखसरस (गंगा तीर्थ)।

विमान - नारायण विमान।

प्रत्यक्ष - पार्थन, वरुणन्, एकादश रुद्रगण उत्सवर एवं मूलवर दोनों - श्रीदेवी, भीदेवी, नीलादेवी समेत हैं। यहाँ के भगवान तिरुनांगूर की 11 गरुड सेवा में पधारते हैं।

कोलवल्लि रामन नामक एक दूसरे सुंदर शंख-चक्रधारी उत्सवमूर्ति भी हैं। धनुष-बाण सहित दर्शन देते हैं। कहा जाता है - इसकी मूलमूर्ति थोडी दूर पर एक बगीचे के मंदिर में विराजमान हैं। यह ऐतीह्य है कि यहाँ चरम श्लोक की व्याख्या की गई।

मंगलाशासन - 2 आल्वार, ग्यारह दिव्यपद।

40) तिरुच्चित्तिरक्कूडम (चितंबरम्)

चेन्नै-तिरुच्ची मेइन लाइन में - चेन्नै से 248 कि.मी. की दूरी पर है। यह मंदिर चितंबरम् शहर में तिल्लै नटराज मंदिर के अंदर है। चितंबरम् स्टेशन से 2 कि.मी. दूरी पर है।

मूलमूर्ति - गोविंदराजन पूर्वाभिमुखी योग शयन मुद्रा।

उत्सवर - 1. देवादिदेवन पार्थसारथि पूर्वानुमुखी आसीनस्थ उपदेश मुद्रा में दर्शन देते हैं। 2. चित्र कूडत्तुळ्ळान उभयनाच्चियार सहित दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - पुंडरीकवल्लि (अलग सन्निधी)।

तीर्थ - पुंडरीक पुष्करिणी।

विमान - सात्विक विमान।

प्रत्यक्ष - तिल्लै तीन हज़ार दीक्षितर भक्त, कण्वर, पतंजली यहाँ वैखानस पद्धति के अनुसार आराधना होती है।

विशेष - यहाँ का गोविंदराजर मंदिर नटराज मंदिर के परिसर में होने पर भी अलग गर्भगृह, राजगोपुर, ध्वजस्तंभ, मडप्पळ्ळि (महा प्रसाद बनाए जाते हैं) आदि है। (प्रसाद बनने का स्थान) यह ऐतीहृ है कि। भगवान क्षीराब्धि नाथ

जैसे शयन मुद्रा में नटराज पेरुमाल के ताण्डव-नृत्यु का बड़ी प्रसन्नता के साथ अनुभव करते हैं। यहाँ के मंडप में नृत्य की सभी मुद्राएँ सुन्दर शिला के रूप में अंकित हैं। भरत मुनि ने यहीं पर नाट्य शास्त्र के प्रकट किया। तिल्लै अप्पन ने भी भगवान नटराज के साथ ताण्डव नृत्य किया। इसलिए तिल्लैनगर भी नाम पड़ा है।

गोविंदराज की सन्निधि के बाहर जहाँ से भगवान के दर्शन करते हैं उसी स्थान से दक्षिणाभि मुखी नटराज के दर्शन कर सकते हैं। अर्थात् एक स्थान से गोविंदराज एवं नटराज के दर्शन कर सकते हैं। यहाँ से लगभग 10 कि.मी. पर श्रीमन नाथमुनि का अवतार स्थल काट्टुमन्नार कोयिल है। यहाँ से श्रीमूष्णम (स्वयं व्यक्त क्षेत्र) लगभग 30 कि.मी. दूरी पर भूवराह पेरुमाल के दर्शन कर सकते हैं। मंदिर की पश्चिम वीथी में कोदंडरामर सन्निधि है।

मंगलाशासन - दो आल्वार, 32 दिव्य पद। श्रीरामचन्द्र जैसे चित्रकूट में रहते थे उसी प्रकार चित्रित करते कुलशेखर आल्वार ने उत्सवमूर्ति का मंगलाशासन किया है। इसलिए चित्रकूडत्तान नाम हुआ।

क्रमशः

ऋषि-मुनि

ऋषि वामदेव

- डॉ.जी.सुजाता

ऋषियों ने हिंदू धर्म के वैदिक मंत्रों की रचना की। इन्ही ऋषियों में से सप्त ऋषि ऐसे थे जिनका हिंदू धर्म में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। संपूर्ण ऋग्वेद दस मंडलों में प्रविभक्त है। प्रत्येक मंडल के मंत्रों के ऋषि अलग-अलग हैं। उनमें से ऋग्वेद के चौथे मंडल के मंत्रद्रष्टा वामदेव ऋषि हैं। चौथे मंडल में कुल 58 सूक्त हैं। जिनमें महर्षि द्वारा अग्नि, इंद्र, वरुण, सोम, ऋभु, दधिकाष्ण, विश्वदेव तथा उषा आदि देवताओं की स्तुतियाँ की गयी हैं। उन सूक्तियों में लोक कल्याण की उदात्त भावना निहित है। ऋग्वेद का चौथा मंडल महर्षि वामदेव के द्वारा द्रष्टा होने के कारण इसे ''वामदेव मंडल'' कहा जाता है। इनके द्वारा द्रष्टा ऋचाएं ''वामदेवी ऋचाएं'' कहलाती हैं।

चतुर्थ मंडल में एक मुख्य ऋचा (मंत्र) आयी है जो 'सौरी ऋचा' कहलाती है। उसमें भगवान सूर्य ही सर्वात्मा, सर्वव्यापक, सर्वनियंता, सर्वाधार तथा परब्रह्म परमात्मा के रूप में निरूपित किये गये हैं, अतः इस ऋचा का सूर्य, आदित्य या सविता-संबंधी वेद में आये सभी मंत्रों में विशेष महत्व है।

महर्षि वामदेव गौतम ऋषि के पुत्र कहे गये है। इनकी गणना गोत्रकार ऋषियों में होती है। गायत्रि-मंत्र के चौबीस अक्षरों के अलग-अलग ऋषि हैं, उनमें पाँचवें अक्षर के ऋषि वामदेव ही हैं। उनका तप, स्वाध्याय, अनुष्ठान तथा आत्म निष्ठैक्य अत्यन्त प्रसिद्ध है। मुख्य रूप से ये इंद्र, अग्नि तथा सविता देवी के उपासक थे। इसी तप, स्वाध्याय और आध्यात्म साधना के बल पर उन्हें मंत्र शक्ति का दर्शन हुआ था।

उन्हें गर्भावस्था में ही अपने विगत दो जन्मों का ज्ञान हो गया था और उसी अवस्था में इंद्र के साथ तत्वज्ञान पर इनकी चर्चा हुई थी। वैदिक उल्लेखानुसार सामान्य मनुष्यों की भाँति जन्म न लेने की इच्छा से इन्होंने माता का उदर फाड़कर उत्पन्न होने का निश्चय किया। वामदेव की माँ को इसका आभास हो गया। अतः उसने अपने जीवन को संकट में पड़ा जानकर देवी अदिती से रक्षा की कामना की। अदिती और इंद्र ने प्रकट होकर गर्भ में स्थित वामदेव को बहुत समझाया, किंतु वामदेव नहीं माने और वामदेव ने इंद्र से कहा, ''इंद्र! मैं जानता हूँ कि पूर्वजन्म में मैं ही मनु तथा सूर्य रहा हूँ। मैं ही ऋषि कक्षीवत (कक्षीवान) था। कवि उशना भी मैं ही था। मैं जन्मत्रयी को भी जानता हूँ। वामदेव कहने लगे जीव का प्रथम जन्म तब होता है, जब पिता के शुक्र कण माँ के शोणिक द्रव्य से मिलते है। दूसरा जन्म योनि से बाहर निकालकर है, और तीसरा जन्म मृत्युपरांत पुनर्जन्म है। यही प्राणी का अमरत्व भी है।''

वामदेव ने इंद्र को अपने समस्त ज्ञान का परिचय देकर अपने योगबल से श्येन पक्षी का रूप धारण किया तथा अपनी माता के गर्भ से बाहर निकल आये। वामदेव की इस कार्य से इंद्र क्रोधित हो गये, किन्तु वामदेव ने इंद्र की स्तुति करके उन्हें प्रसन्न कर लिया और इंद्र की उन पर कृपा हो गयी।

कालांतर में वामदेव ऋषि पर दरिद्रता देवी ने कृपा की। ऐसे में वे निर्धन हो चले थे इसी कारण वामदेव के सभी मित्रों ने उनसे मुँह मोड़ लिया - कष्ट चारों ओर से घिर आये। उनकी तपोबल भी क्षीण हो चला था। वामदेव के तप, व्रत ने भी उनकी कोई सहायता नहीं की। वामदेव के आश्रम के सभी पेड़-पौधे सूख गए थे। आश्रम के सभी फलदार पेड़ फलविहीन हो गये। पत्नी के अतिरिक्त सभी ने वामदेव ऋषि का साथ छोड़ दिया था, किंतु ऋषि शांत और अडिग थे। वामदेव ऋषि के पास खाने के लिए और कुछ भी नहीं था। तभी एक दिन वामदेव ने यज्ञ-कुंड की अग्नि में कुत्ते की आँते पकानी आरंभ कीं। वामदेव को एक सूखे

ठूंठ पर एक श्येन पक्षी बैठा दिखायी दिया, उसने पूछा ''वामदेव जहाँ तुम हवि अर्पित करते थे, वहाँ कुत्ते की आँतें पका रहे हो-यह कौन सा धर्म है?'' ऋषि ने कहाँ, ''यह आपद धर्म है। चाहो तो तुम्हें भी इसी से तुष्ट कर सकता हूँ। वामदेव ने कहा मैंने अपने समस्त कर्म भी क्षुधा को अर्पित कर दिये हैं। आज जब सबसे उपेक्षित हूँ, तो हे पक्षी, तुम्हारा कृतज्ञ हूँ कि तुमने करुणा प्रदर्शित की।'' श्येन पक्षी वामदेव की करुणा स्थिति को देखकर द्रवित हो उठा। इंद्र ने श्येन का रूप त्याग अपना स्वाभाविक रूप धारण किया तथा वामदेव को मधुर रस अर्पित करके उन्हें तृप्त किया था।

शिव पुराण के अनुसार

वामदेव शिवजी के भक्त थे और शरीर पर भस्म धारण करते थे। एक बार एक ब्रह्मराक्षस उन्हें खाने आया और ज्यों ही वामदेव को पकड़ा तो उसके शरीर पर भस्म लग गई। भस्म लगने से उसके पापों का नाश हो गया तथा उसे शिवलोक की प्राप्ति हुई। वामदेव के पूछने पर उस ब्रह्मराक्षस ने बताया कि वह पच्चीस जन्म पूर्व दुर्जन नामक राजा था, अनाचारों के कारण मरने के बाद वह रुधिर कूप में डाल दिया गया। फिर चौबीस बार जन्म लेने के उपरांत वह ब्रह्मराक्षस बना। वामदेव ने सामगान यानी संगीत की रचना की है। भरत मुनि द्वारा रचित भरत नाट्य शास्त्र सामदेव से ही प्रेरित है। हज़ारों वर्ष पूर्व रचे गए सामदेव में संगीत और वाद्य यंत्रों की संपूर्ण जानकारी मिलती है।

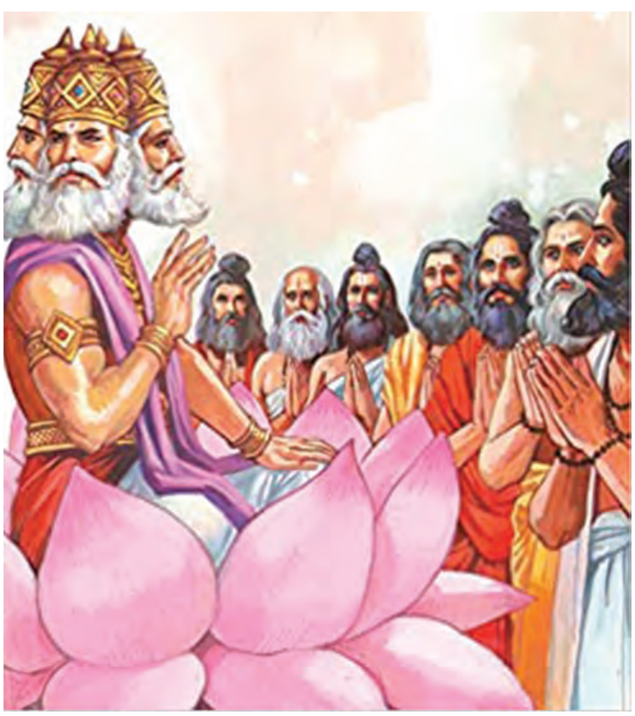

वामदेव मंदिर

बांदा, उत्तर प्रदेश के, यमुना नदी के दक्षिण में बुंदेलखंड क्षेत्र में बांदा जिले का एक एतिहासिक शहर है। महर्षि वामदेव की तपोभूमि है। इस शहर का नाम महर्षि वामदेव के नाम पर है। वामदेव के बारे में कहा जाता है कि वह एक पहाड़ी के किले में अपने आश्रम में रहकर तपस्या किया करते थे।

वामदेवेश्वर पर्वत पर एक विशाल शिव मंदिर भी है, यहाँ शिवलिंग स्थापित है। मंदिर का नाम वामदेव ऋषि के नाम पर रखा गया था, जो हिंदू पौराणिक कथाओं में भगवान राम के समकालीन के रूप में वर्णित हैं। बम्बेशर पहाड़ के मंदिर में सबसे बड़े और सबसे पुराने शिवलिंगों में से एक पाया जा सकता है। धर्मशास्त्रों के मुताबिक, इस शिवलिंग को महर्षि वामदेव ने स्थापित किया था। भगवान राम ने यहाँ आकर शिव की आराधना की थी। ऐसी मान्यता है कि यहाँ शिव पूजा का सबसे अच्छा फल मिलता है। यहाँ महामृत्युंजय का जाप भी फलदाई होता है।

इस पर्वत के पत्थरों से मधुर धुन निकलती है। ये धुन सुनने में ऐसी लगती है, जैसे कोई आधुनिक वाद्य यंत्र बजा रहा हो। मान्यता है कि त्रेतायुग में भगवान राम जब माता जानकी और भाई लक्ष्मण के साथ चित्रकूट आए, तब उन्हें पता चला कि बांदा में वामदेव तपस्या कर रहे हैं। ये जानकर भगवान राम उनसे मिलने इसी पर्वत पर आए। कहते हैं कि भगवान राम के आने की खबर सुनकर पत्थर भी इतने आनंदित हो गए कि जहाँ-जहाँ उनके चरण पड़े, उस पत्थर से संगीत की धुन निकल पड़ी थी। त्रेतायुग से कलियुग यानि आज तक ये धुन उसी तरह निकल रही है।

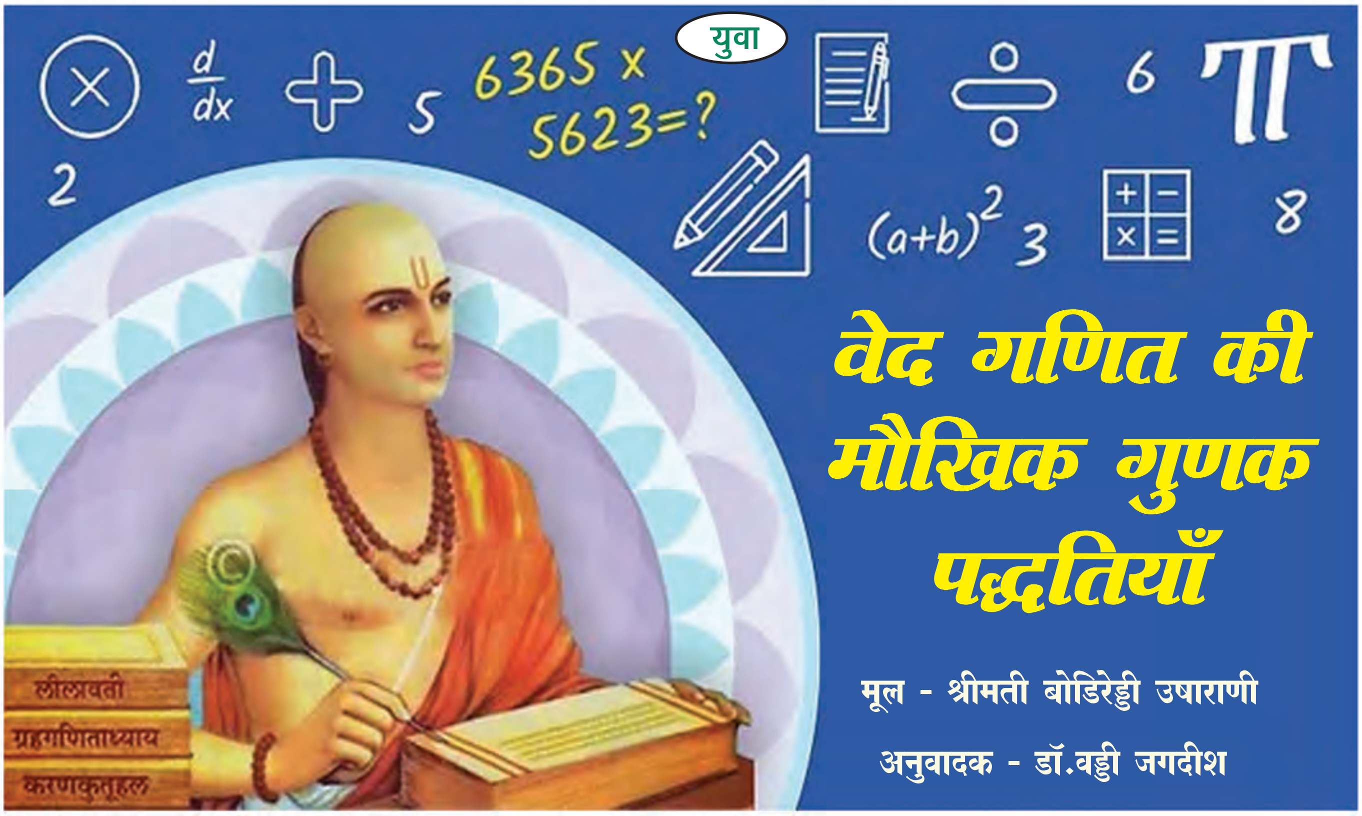

वेद गणित की मौखिक गुणक पद्धतियाँ

मूल - श्रीमती बोडिरेड्डी उषाराणी

अनुवादक - डॉ.वड्डी जगदीश

100 के करीब अंकों का फल के लिए

पद्धति : 100 से घटाने पर आनेवाले अंकों का फल को दशम एवं प्रथम स्थान पर लिखिए। ये अंकों को मिलाकर तुरंत 100 से घटाने पर आनेवाले फल को हजार एवं शतक स्थान पर लिखना चाहिए।

1. उदा : मान लीजिए 93X92... चाहिए तो...

क्रमशः 100 से घटाने पर 7, 8 आते हैं। इन का गुणन फल 56 को दशम एवं प्रथम स्थान पर लिखिए।

अंकों का कुल 93+92= 185 से 100 निकालना है। तब 85 आता है। इस को हजार, शतक स्थान पर लिखिए। तब संख्याओं का गुणन फल 8556 आता है।

93X92 = (93+92-100), (100-93) (100-92)

= 85, 7X8

= 8556.

2. उदा : मान लीजिए 99X97 चाहिए तो...

100 से क्रमशः निकालने पर 1, 3 आते हैं। इन का गुणन फल 3 आता है। इस को प्रथम स्थान पर लिखिए। दशम स्थान पर '0' को लिखिए।

संख्याओं का कुल 99+97=196 से 100 को घटाने पर 96 आता है। इस को हजार एवं शतक स्थान पर लिखिए। तब उन का लब्ध 9603 होता है।

99X97 = (99+97-100), (100-99) (100-97)

= 96, 1X3

= 9603.

1. समस्या : मान लीजिए 98X102 चाहिए तो...

100 से निकालने पर क्रमशः 2, -2 आते हैं। इन का गुणन फल -4 आता है।

संख्याओं का कुल 98+102= 200 से 100 को घटाने पर 100 आता है। इस को दस हजार, हजार, शतक स्थान पर लिखिए... तब 10,000 आता है। इसको -4 घटाने से 9996 आता है।

98X102 = (98+102-100), (100-98) (100-102)

= 100, 2X-2

= 100, -4

= 10,000 -4

= 9996.

2. समस्या : 25X98 का फल चाहिए तो 100 से निकालने पर क्रमशः 75X2 आते हैं। इन का लब्ध 150 आता है। इसको शतक, दशम, प्रथम स्थान पर लिखिए। तब अंकों का कुल 100 को निकालने से 23 आता हैं। इस को हजार एवं शतक स्थान पर लिखिए। तब इन का मूल्य 2300 होता है। इसको 150 को मिलाने से उन का फल 2450 होता है।

25X98 = (25+98-100), (100-25) (100-98)

= 23, 75X2

= 2300+150

= 2450.

200 के पास अंकों का फल को पहचानना :

पद्धति : 200 से संख्याओं को निकालने पर आनेवाले संख्याओं का फल को दशम एवं प्रथम स्थान पर लिखिए।

* अंकों का कुल से 200 को घटा दीजिए। तब 2 से गुणना करने से मिला हुआ फल को दस हजार, हजार, शतक स्थान पर लिखिए।

उदा : 198X199 चाहिए तो...

200 से इन को निकालने पर क्रमशः 2, 1 आते हैं। तब इन का फल 2 आता है। इस को प्रथम स्थान पर लिखना है तथा दशम स्थान पर '0' को लिखिए।

अंकों का कुल 198+199= 397 से 200 को निकालने पर 197 आता है। तब इसे 2 से गुणना करने पर 394 आता है। इसे दस हजार, हजार, शतक एवं दशम स्थान पर लिखिए। तब इन का फल 39402 आता है।

198X199 = (198+199-200)X2, (200-198)

(200-199)

= 197X2, 2X1

= 39402.

3. समस्या : मान लीजिए 198X202 चाहिए तो...

200 से निकालने पर क्रमशः 2, -2 आते हैं। इन का फल -4 होता है।

अंकों का कुल से, 200 को निकालने पर 200 आता है। इसे 2 से गुणना करने पर 400 आता है। इसे दस हजार, हजार, शतक एवं दशम स्थान पर लिखिए तब 40,000 होता है। इससे 4 को निकालने पर 40,000-4= 39996 होता है।

198X202 = (198+202-200)X2, (200-198)

(200-202)

= 200X2, 2X-2

= 400, -4

= 40,000 -4

= 39,996.

इस प्रकार आसानी से अंकों का फल को गुणना कर सकते हैं।

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामिपुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. बगीचे : देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिन में विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

वैदिक योग पहले प्रकार या प्रथम प्रकार का योग है। इसलिए यह पारंपरिक है और इसे ''राज योग'' के रूप में भी जाना जाता है। यह हठ योग से अलग है, जो वर्तमान में लोकप्रिय है। इसे पंतजलि द्वारा दूसरी शताब्दी में कही बनाया गया था। अपनी पुस्तक योग सूत्र में, जिसमें 196 संक्षिप्त सूत्र शामिल है, उन्होंने योग का विकास किया, जिसे अष्टांग योग के रूप में भी जाना जाता है। पतंजलि के अनुसार, योग का लक्ष्य पुरुष को प्रकृति के संचालन में सक्रिय भागीदारी से मुक्त करना है। इस गुमराह भागीदारी से दु:ख लाया जाता है। शास्त्रीय योग में, इसे ''आत्म-साक्षात्कार'(कैवल्य) के रूप में संदर्भित किया जाता है, जिसका शाब्दिक रूप से अकेलेपन में अनुवाद किया जा सकता है। पारलौकिक स्व, या ''स्व'' वह है जो ''अकेला'' (केवला) है। यह मुक्ति है, जिसे अभी प्राप्त किया जा सकता है और जीवन-मुक्ति (शाब्दिक रूप से, ''जीवित मुक्ति'') है।

हालांकि, यह विदेह-मुक्ति (''विकृत मुक्ति होने की आवश्यकता नही है। प्रत्येक सूत्र एक सिद्धांत है जो पुरुष को प्रकृति से उलझाता है, मुक्ति लाता है और पतंजलि ने इसके मार्ग को अष्टांग मार्ग के रूप में वर्णित किया है। भले ही एक सूत्र में केवल तीन से दस संस्कृत शब्द है, प्रत्येक एक दर्शन के गहन विचारों से भरा हुआ है। छिपे हुए रहस्यों को उजागर करने के लिए प्रत्येक शब्द को ध्यान के माध्यम से सावधानीपूर्वक व्याख्या की जानी चाहिए। ध्यान से अधिक, साधक ईमानदार और प्रतिबद्ध अभ्यास (साधना) के माध्यम से योग का आवश्यक अर्थ सीखते हैं।

196 सूत्रों को चार पुस्तकों में विभाजित किया गया है। समाधि पाद योग का सार (51 सूत्र) है। साधना पद योग के अभ्यास (56 सूत्र) के लाभों से संबंधित है।

कैवल्य पाद मुक्ति या पीडा से मुक्ति है (34 सूत्र)।

अथ योगानुशासनम्। (समाधि पाद-1)

अथा = अभी; योग=योग; अनुशासनम=व्याख्या या उपदेश।

''अब योग पर एक व्याख्या...'' (अथ योगानुशासनम्) पतंजलि के योग सूत्र में पहला सूत्र है। यह अधूरी पंक्ति, या आधा-वाक्य, योग

पतंजलि के योग सूत्र

अंग्रेजी मूल - डॉ.के.वी.रघुपती

अनुवाद - डॉ.बी.ज्योत्स्नादेवी

के अभ्यास की अत्यावश्यकता पर जोर देते हुए, इस बिंदु तक हमारे जीवन को पकड़ लेता है। इस बिंदु से हमारे जीवन में, अतीत महत्वहीन है। इसलिए, यह अस्पष्ट वाक्य योग की तात्कालिकता को आंशिक रूप से व्यक्त करता है। यह शेष सूत्र, या किसी के जीवन में क्या बचा है को शुरू करने का एक अजीब तरीका है; यह एक संकेत या चेतावनी के रूप में कार्य करता है कि किसी का जीवन अधूरा है क्योंकि उन्होंने योग का अनुभव नही किया है। अतः योगाभ्यास की आवश्यकता है। मानव विज्ञान ने कभी भी ऐसे आयाम पर विचार नही किया है। यह विज्ञान विशेष रूप से आत्म-शरीर और मन से संबंधित है - न कि बाहरी पदार्थ से।

योग का अभ्यास कभी नही किया जाता है यदि यह अभी नही किया जाता है जहाँ यह है। कल नही, अभी। यह इस बात पर भी प्रकाश डालता है कि जीवन कितना जटिल है और इसे अभी नहीं तो कभी नही जीना कितना महत्वपूर्ण है। यह जटिलता पतंजलि के समय में मौजूद थी। यह कोई आधुनिक परिघटना नही है। यदि आप यह पहचानने में असमर्थ है कि आप अभी कौन है और क्या है, तो एक जोखिम है कि आपका शरीर बीमार हो जाएगा, आपका मन विक्षिप्त हो जाएगा और आपका जीवन सीमित और अर्थहीन हो जाएगा।

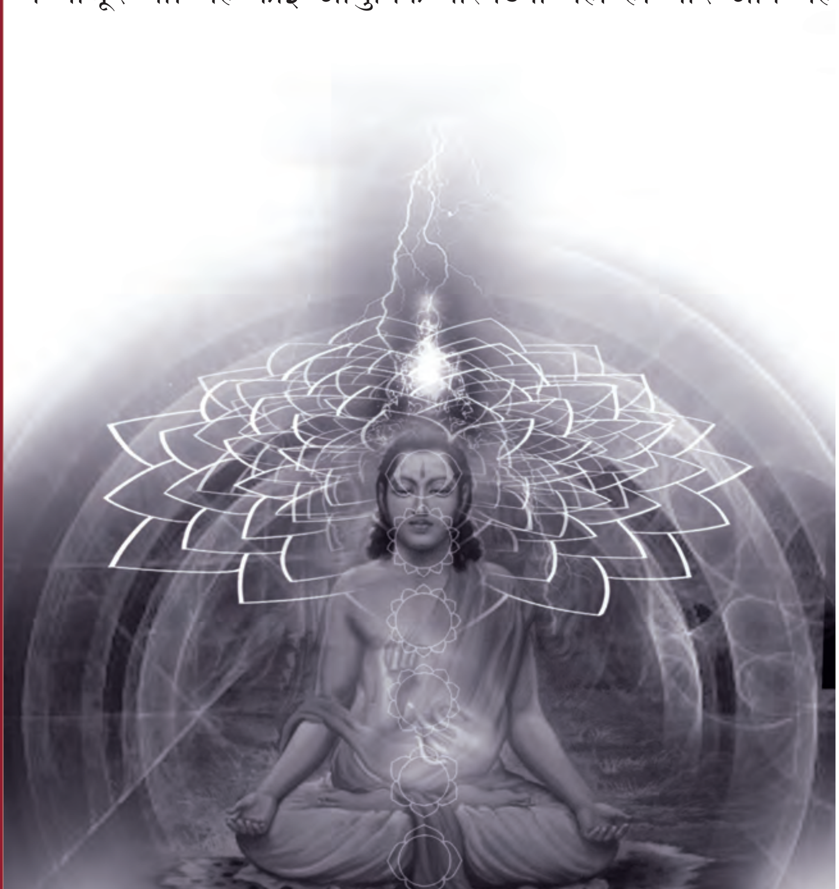

पतंजलि हमे सलाह दे रहे है कि हम अपने जीवन की जांच करें और देखे कि हमने दुख और पीडा से कैसे निपटा है। क्या हमे हमेशा के लिए दर्द और पीडा सहना है? क्या कोई रास्ता नही है? जीवन में दर्द और पीडा पर काबू पाने के साधन के रूप में योग अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। यह योग का समय है यदि आपने वह सब कुछ अनुभव कर लिया है जो जीवन प्रदान करता है- धन, शक्ति, संपत्ति और आनंद और इन सब के अंत में महसूस किया कि इसमें से किसी ने भी वास्तव में आपको लाभ नही पहुँचाया या अंततः आपको संतुष्ट नही किया। यह एक वाक्य खंड का तात्पर्य है।

पंतजलि एक वाक्य के टुकडे के साथ जीवन में जो कुछ भी अनुभव करता है उसे खारिज कर देता है। जीवन में पूर्ति की कमी है। पहला सूत्र शुरू होता है, ''और अब, योग पर एक व्याख्या।'' इसका

तात्पर्य यह है कि, अंत में, आपको इस बात का बोध होता है कि कुछ भी काम नही करता है और आपको पता नही है कि आखिर क्या हो रहा है; पीडा दुख और अज्ञानता, ये सब तुम्हे तोड देते है।

तब तुम योग का अनुभव करते हो। अभी सीखने, अभ्यास करने और जानने का एक तरीका है।

योगश्चित्वृत्तिनिरोधः। (समाधि पाद-2)

योगः = योग की तकनीक, चित्त = मनः, वृत्ति = संशोधन, निरोध = रोक, दमन = संयम।

'योग' मन के संशोधनों का उन्मूलन है। पतंजलि के अनुसार, यह सबसे महत्वपूर्ण सूत्रों में से एक है जो बताता है कि योग क्या है। यह उनके सूत्र की शुरुआत में पेश किया गया है। ''योग'' शब्द के विविध अर्थ है। इसकी उत्पत्ति संस्कृत शब्द युज से हुई है, जिसका अर्थ है, 'जुडना', इसके प्रमुख अर्थों में से एक है। वैदिक दर्शन कहता है कि यह ''जीवात्मा'' को 'परमात्मा' के साथ जोड रहा है, दिव्य वास्तविकता जो प्रकट ब्रह्मांड की नीव या वसंत के रूप में कार्य करती है। निराकार, निर्गुण, अनंत, अनिर्वचन और गुणातीत इसके लक्षण है। यह शुद्ध चेतना के अलावा और कुछ नही है।

पतंजलि योग की अपनी अनूठी परिभाषा प्रस्तुत करते है, यह दावा करते हुए कि यह मानसिक परिवर्तनों की समाप्ति है। सूत्र में सबसे महत्वपूर्ण शब्द चित्त है, जो चित्त या सिटी से आता है, वेदांत में सत्-चित्त-आनंद के रूप में ज्ञात परमात्मा के तीन गुणों में से एक हैं। स्थूल जगत का सूक्ष्म जगत सिट्टा, इस सिट का प्रतिबिंब है। चित्त एक सार्वभौमिक माध्यम है जिसके माध्यम से चेतना संचालित होती है, फिर भी समकालीन मनोविज्ञान के अनुसार ''मन'' केवल विचार, इच्छा और भावना को व्यक्त करने में सक्षम है। सिट्टा, हालांकि मौलिक रूप से अप्रासंगिक है, फिर भी विषय वस्तु से प्रभावित होता है। यह पुरुष और प्रकृति की रचना है, और यह एक अमूर्त स्क्रीन जैसा दिखता है जिस पर ब्रह्मांड प्रदर्शित होता है।

सूत्र में तीसरा शब्द वृत्ति 'अस्तित्व' क्रिया का व्युत्पन्न है, जो मूल शब्द 'वर्त' में पाया जाता है। इसलिए वृत्ति होने का एक तरीका है। लेकिन केवल इसके परिवर्तनों, अवस्थाओं, क्रियाओं या कार्यों के संबंध में यह वास्तव में मौजूद है। छह सूत्रों (समाधि पद 6-11) में, पतंजलि पाँच स्पंदन प्रकारों को सूचीबद्द करता है जो व्यवधान उत्पन्न करते है। सिट्टा पाँच संशोधनों के बाहर मौजूद नही है। ये पाँच श्रेणियों शुद्ध चेतना की प्राप्ति के लिए बाधाओं के रूप में कार्य करती है। जैसे ही हम कुछ सूत्रों का अध्ययन करना शुरू करते है, हम उन्हें संबोधित करेंगे।

सूत्र का अंतिम शब्द, निरोध, निरोधम का व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है ''संयमित'', ''नियंत्रित'' या ''बाधित''। प्रारंभिक चरणों में संयम शामिल होता है, और अंतिम चरण में अवरोध शामिल होता है। विभूति पाद का सूत्र 9 इसकी चर्चा प्रदान करता है। यह वर्णन योग को परिवर्तन (वृत्तियों) के संयम के रूप में परिभाषित करता है, जो चेतना के रहस्योद्घाटन की ओर ले जाता हैं। यह 'क्रिया-योग' में धर्म और ध्यान चरणों के दौरान हो सकता है।

चीकू स्वास्थ्य लाभ

- डॉ.सुमा जोषि

चीकू या सपोटा (चीकू) एक लोकप्रिय उष्णकटिबन्धीय सर्रियों का फल है। जो इसके मीठे स्वाद और अपरिहार्य औषधीय गुणों और चिकित्सीय लाभों के लिए पसन्द किया जाता है। इसमें प्राकृतिक शर्करा से बना नरम, आसानी से पचने योग्य होता है। जो आम, केला और कटहल के अनुरूप होता है। रसीली भूरी त्वचा और दानेदार बनावट के साथ चीकू की मीठी सुगंध का आनंद लेना बेहद सुखद है। मेक्सिको, ईस्टर ग्वाटेमाला और मध्य अमेरिका में इसकी जडों का पता लगाते हुए, उपनिवेशवादी इसे फिलीपीसं ले गए, जहाँ से यह एशिया के बाकी हिस्सों में पहुँचा, फिर 19वीं शताब्दी के अन्त में भारत में अपना रास्ता बना लिया।

भारत में, कर्नाटक चीकू का सबसे बडा उत्पादक है, इसके बाद महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश और पश्चिम बंगाल का स्थान आता है। भारत में चीकू की विभिन्न किस्मों की खेती की जाती है जिन्हें प्रफुल्लित करनेवाले नामों से जाना जाता है जैसे काली पाटली, क्रिकेट बॉल, बारामती, पिली पाटली, द्वारापुडी और छत्री। कन्नड में सपोटा, हिन्दी में चीकू या चिकी, तेलुगु में सपोटा, मराठी में चिक्कू, तमिल में सपोटा और बंगाली में सपेटा के नाम से जाना जाता है। जबकि नोज बेरी, चीकू बेर, चीकू... इस स्वादिष्ट फल के अन्य सामान्य नाम हैं।

चीकू एक धीमी गति से बढ़नेवाला सदाबहार पेड है जो Sapotaceae family से संबंधित है। इसका वैज्ञानिक नाम है Manilkara zapota. यह पेड आमतौर पर 30 मीटर से अधिक की ऊँचाई तक बढ़ता है और गर्म और नम मौसम पसंद करता है।

यह एक हवा प्रतिरोधी पौधा है और रोपण के बाद तीसरे या चौथे वर्ष के बीच फल देना शुरू कर देता है। पौधे की छाल सफेद, चिपचिपे लेटेक्स से भरपूर होती है जिसे चिकल कहा जाता है और पत्तियाँ अंडाकार, लंबी हरी और चमकदार होती हैं। फूल सफेद होते हैं। यह पौधा केवल गर्म और उष्णकटिबन्धीय जलवायु में ही पनप सकता है। चीकू का पेड साल में दो बार फल देता है, हालांकि इसमें पूरे साल फूल आते हैं।

रासायनिक संगठन

शर्करा, प्रोटीन, एस्कॉर्बिक एसिड, फिनोल, कैरोटीनॉयड और खनिज जैसे लोहा, तांबा, जस्ता, कैल्शियम और पोटेशियम।

आयुर्वेदिक गुणधर्म

इसका स्वाद मीठा (रस) है, प्रकृति में हल्का है, ठंडी तासीरवाला है और पाचन के बाद मीठा स्वाद (विपाक) है। यह वात और पित्त दोष को संतुलित करता है, इसलिए कब्ज और गैस्ट्राइटिस में बहुत उपयोगी है। यह कफ को बढ़ाता है, इसलिए कफ प्रकृति या बढ़े हुए कफवाले लोगों को इसका सेवन सीमित मात्रा में करना चाहिए।

आरोग्य के लिए प्रयोग

चीकू का उपयोग पारंपरिक आयुर्वेद चिकित्सा में कई बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता है। यह फल एंटीऑक्सिडेंट का भंडार है जिसका व्यापक रूप से त्वचा और बालों की बीमारियों के इलाज के लिए उपयोग

किया जाता है। बीज के तेल का उपयोग त्वचा के मलहम और क्रीम के लिए आधार के रूप में किया जाता है, जबकि चीकू पेड का दूध स्पा अर्क औषधीय गुणों को प्रदर्शित करता है और यह त्वचा के मस्सों के इलाज के लिए एक प्रभावी घरेलू उपचार है।

बीजों को धोकर, धूप में सुखाकर, बारीक पाउडर बनाकर, सर पर लगाकर 1-2 घंटे के बाद धोना चाहिए। यह उपाय रूसी और सिर की जूँ से छुटकारा पाने के लिए अच्छा है। चीकू की कांड के मिश्रण में शक्तिशाली रोगाणुरोधी गुण होते हैं जिनका उपयोग रूसी को खत्म करने के लिए किया जाता है। चीकू के पौधे की पत्तियाँ महत्वपूर्ण पोषक तत्वों और पौधों के यौगिकों से भरपूर होती हैं, जो मुँह के छालों को ठीक करने में प्रभावी साबित होते हैं।

यह आहार फाइबर का एक प्रचुर स्रोत है जो प्राकृतिक रेचक के रूप में कार्य करता है और मल में मात्रा जोडता है, मल त्याग को बढ़ावा देता है और कैंसर पैदा करनेवाले विषाक्त पदार्थों से बृहदान्त्र को लाष्मिक परत की रक्षा करने में सहायता करता है। चीनी का एक प्राकृतिक स्रोत होने के नाते, चीकू का सेवन तुरंत ऊर्जा के स्तर को पूरा कर सकता है और गहन खेल गतिविधियों या व्यायाम के दौरान एक बेहतरीन स्नैक विकल्प के रूप में कार्य करता है। चीकू आवश्यक पोषक तत्वों विशेषकर विटमिन-सी से भरपूर एक ऐसा भोजन है जो कमजोर प्रतिरक्षा प्रणालि को सुधारता है और संपूर्ण स्वास्थ्य को बढ़ाता है। इसके अलावा, एक प्राकृतिक शामक होने के कारण यह तंत्रिका तंत्र को शांत करता है और मूड को अच्छा बनाता है। चीकू एंटीऑक्सिडेंट्स से समृद्ध है। यह ऑक्सीडेटिव तनाव से लडता है और ट्यूमर कोशिकाओं के निर्माण को रोकता है। यह कई प्रकार के कैंसर के खतरे को कम करता है।

चीकू न केवल पोषक तत्वों से भरपूर है बल्की एक ऐसा फल है जिसे आप गर्भवती या स्तनपान के दौरान सुरक्षित रूप से खा सकती हैं। वास्तव में, अध्ययनों से पता चला है कि लगभग 100 grams चीकू का सेवन सुबह की मतली से राहत दिलाने में मदद कर सकता है। चीकू में मौजूद एंटीऑक्सिडेंट आपको गर्भावस्था के दौरान सक्रंमण से लडने में मदद कर सकते हैं और यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि आपका दिल दो लोगों के लिए पर्याप्त रक्त पम्प करने के लिए पर्याप्त स्वस्थ है। गर्भावस्था के दौरान कई महिलाओं को कब्ज की समस्या भी हो जाती है और उन्हें बवासीर भी हो सकती है। चीकू का सेवन इन दोनों मामलों में भी राहत दिलाने में मदद कर सकता है।

यह स्वादिष्ट फल कैल्शियम, फास्फोरस और आयरन से भरपूर होता है जो हड्डियों को मजबूत रखता है। यदि आपने नियमित रूप से चीकू खाया है, तो आपको जीवन में बाद में पूरक आहार की आवश्यकता नहीं होगी। आयरन और ताम्बे से भरपूर चीकू आयरन के स्तर को सुधारने में मदद करता है और एनीमिया का इलाज करता है। चीकू में प्रचुर मात्रा में पोटेशियम, एक प्रमुख खनिज, सोडियम के स्तर को कम करने, मांसपेशियों को आराम देने, रक्त परिसंचरण में सुधार करने और रक्तचाप को बनाए रखने में सहायता करता है।

भारी मात्रा में विटमिन-ए से भरपूर चीकू आंख के बाहरी आवरण कॉर्निया के स्वास्थ्य को बेहतर बनाकर अच्छी दृष्टि बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

चीकू में मौजूद ताम्बे के गुण एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण प्रदर्शित करते हैं जो कठोरता और जोडों के दर्द को कम करते हैं।

यह मधुर, शीत (स्वाद में मीठा और ठण्डी तासीरवाला) होने के कारण कफ दोष को बढ़ाता है। इसलिए खांसी, सर्दी के दौरान इसके सेवन से बचना चाहिए। अस्थमा, एलर्जिक राइनाइस्सि या किसी अन्य श्वसन संबंधी बिमारी के रोगियों को फल खाने से बचना चाहिए।

''स्वस्थ रहें खुश रहें।''

आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य
आयोजक - आचार्य के.सूर्यनारायण
हिन्दी में निर्वहण - डॉ.सी.आदिलक्ष्मी

अष्टविंशः पाठः - अट्ठाईसवाँ पाठ

त्वाम् = आप (तुझे)
माम् = मुझे
युष्मान् = हम सभी
वदितुम् = कहने के लिए
उक्त्व = कहकर
आह्वातुम् = बुलाना

पृच्छति = पूछ रहा है
प्रक्ष्यति = पूछ सकते हैं
पिबति = वो पी रहा है

प्रश्न : (अ)

1. ममाग्रजः त्वामाह्वयति शीघ्रमागच्छ।
2. अत्र बालकाः न सन्ति। त्वमेव उदित्वा आगच्छ।
3. जनकः कुत्रास्ति इति अनुजं पृच्छ।
4. बालकाः क्षीरं सर्वम् अपिबन्।
5. इदानीं युष्मान् कः प्रक्ष्यति?
6. मां के अपृच्छन्?
7. अरे शीघ्रं क्षीरं पिब रे।
8. एषः त्वाम् आह्वातु न आगच्छत्।
9. त्वम् अस्मद्गृहे भोजनार्थमागमिष्यसि वा?
10. अहं नागमिष्यामि किन्तु ममानुजमाह्वय, सः।

जवाब : (अ)

1. मेरा भाई आपको बुला रहा है। जल्दी आओ।
2. यहाँ कोई लड़के नहीं है। आप आकर खुद कहो।
3. पिताजी कहाँ है ऐसा भाई पूछ रहा है।
4. लड़कों ने सारा दूध पीलिया।
5. अभी हमसे कौन सवाल कर सकता हैं।
6. मुझसे किसने पूछा
7. अरे! जल्दी से दूध पीयो!
8. वह आपको बुलाने नहीं आया।
9. क्या आप हमारे घर खाने के लिए आ सकते हैं?
10. मैं नहीं आऊँगी। किंतु मेरी भाई को बुलाना।

प्रश्न : (आ)

1. मेरे भाई को कौन बुलाने गया था?
2. कोई नहीं जायेंगे तो हम लोग जायेंगे।
3. बाद में मैं भी वहाँ आ सकता।
4. क्या वे भोजन करने केलिए आएँगे या नहीं? पूछना।
5. आप ही पूछो।
6. शांत रहो तुम! वे आयेंगे।
7. हमे खाने के लिए किसने आमंत्रित किया?
8. आपका भाई ने आमंत्रित किया है ना!
9. मेरा भाई गाँव में ही नहीं है कैसे बुलाया?
10. वह आज आएगा, ऐसा मेरे भाई ने घर में बताया।

जवाब : (आ)

1. मम अग्रजम् आह्वातुं के अगच्छन्?
2. केऽपि न गच्छन्ति चेत् यूयमेव गच्छत।
3. अनन्तरम् अहमपि तत्र अगमिष्यामि।
4. ते इदानीं भोजनार्थम् आगच्छन्ति वा न वा पृच्छ।
5. यूयमेव पृच्छत।
6. यूयं तूष्णीं भवत; ते एव आगमिष्यन्ति।
7. युष्मान् के भोजनार्थम् आहूतवन्तः?
8. तव अग्रजः आहूतवान् खलु।
9. मम अग्रजः ग्रामे एव नास्ति खलु कथम् आहूतवान्?
10. सः अद्य अगच्छत् इति मम अनुजः अस्माकं गृहे उक्तवान्।

अगस्त महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेष राशि - यह माह आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा। अपने उत्तरदायित्व का उत्तम पूर्वक निर्वाहन करेंगे। यत्र तत्र मान-सम्मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होंगे। राजकीय सहयोग, व्यापार-उद्योग धन्धों में पूर्ण लाभ। धन लाभ। मित्रों का भरपूर सहयोग, कुटुम्बिक सहायता। कार्यालयों में अनेकानेक सफलता।

वृषभ राशि - अपने स्वभाव के कारण अपजश, मान-सम्मानों में कमी, कुटुम्बियों से अपमान, असन्तोष। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, अपने सहयोगियों से मेल मिलाप रखे जिससे कार्य में सफलता प्राप्त होंगे। आमदनी से अधिक खर्च योग बन रहा है इसलिए आर्थिक संतुलन बनाकर रखें। माता-पिता के ऊपर ध्यान रखें।

मिथुन राशि - यह माह आपके लिए अनुकूल रहेगा। शुक्र का परिवर्तन होने से सकारात्मक बदलाव होगा जिससे अपनों का सुख प्राप्त, भ्रातृ सुख, पारिवारिक माहौल सुख-शान्ति बना रहेगा। छात्रों के लिए मध्यम रहेगा। यात्रा सुखमय रहेगा। उद्योग-धन्धे में अनेक लाभ, आय से अधिक खर्च होंगे।

कर्कटक राशि - विविध परेशानियों के कारण मन खिन्न रहेगा और क्रोध उत्पन्न होगा। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, दांपत्य सुख प्राप्त होंगे। धार्मिक कार्यों में रुचि। तीर्थाटन-यात्रा हो सकता है, कुटुम्ब सुख, अपनों का सहयोग। संतान सुख, नौकरी पेशा में उल्लास बना रहेगा। व्यवसाय की स्थिति सामान्य बनी रहेगी।

सिंह राशि - यह माह आपके लिए सामान्य रहेगा। अपने व्यवहार कुशलता से कार्य सिद्ध होंगे, अपनों का सहयोग सुख प्राप्त होंगे। धन लाभ, भ्रातृ-मित्र-पुत्र सुख, विद्या में प्रगति। नूतन निर्माण कार्यों में प्रगति। आर्थिक विकास, उद्योग-धन्धे में सफलता मिलेगी।

कन्या राशि - यह माह आपके लिए कष्टदायक रहेगा। स्वास्थ्य चिंता, कुटुम्ब चिंता बनी रहेगी। आमदनी से अधिक व्यय होगा। शैक्षणिक गतिरोध, व्यापार-व्यवसाय क्षेत्रों में श्रमाधिक्य सफलता। उत्तरार्ध में सूर्य, मंगल का परिवर्तन होगा। जिससे आप कई उलझनों में पड़ सकते हैं। नेत्रविकार, मानसिक व्यथा, कलह, वाद-विवाद।

तुला राशि - इस मास आप कुछ शारीरिक कष्ट से परेशान होंगे। पेट दर्द, वायु विकार, दुर्बलता इस कारण खानपान के ऊपर नियंत्रण रखे। नौकरी-व्यवसाय में उन्नति। अपनों का सहयोग सुख प्राप्त होंगे। अपने कार्यों से मन प्रसन्न रहेगा। धन लाभ, दांपत्य जीवन सुखमय रहेगा।

वृश्चिक राशि - यह माह आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, आत्म विश्वास में वृद्धि, अभिष्टकार्य सिद्धि। निर्माण कार्यों में रुचि बढ़ेगी। व्यापारिक क्षेत्रों में धन लाभ होगा। धन योग बन रहा है जिससे आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। प्रतियोगी परिक्षाओं में सफलता प्राप्त होंगे। ऋण कम होगा। गृह सुख प्राप्त होंगे।

धनुष राशि - विविध रोग परेशानियों से राहत, पुराणे कष्ट समाप्त होंगे। शत्रु बाधा से विमुक्ति, मित्रों का सहयोग। रोजगार के अनेक अवसर प्राप्त होंगे। ऋण समाप्त। नौकरी से संतुष्टि, अपने स्वभाव विचार के कारण लोगों से काम बना लेंगे। शैक्षणिक अभिरुचि। छात्रों के लिए अनुकूल समय रहेगा।

मकर राशि - यह माह आपके लिए मध्यम फलदायक रहेगा। वाणी, स्वभाव के ऊपर नियंत्रण बनाए रखें जिससे कार्य क्षेत्रों में पदोन्नति और धनलाभ होंगे। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, कुटुम्बिक चिंता, संतान पक्ष की चिंता रहेगी।

कुंभ राशि - आपके लिए यह मास सामान्य रहेगा। मन में दुष्प्रवृत्तियों के कारण अनैतिक कार्यों की ओर प्रेरित करेंगी। वक्री बुध, शुक्र, शनि मानसिक-शारीरिक व्यथा देगा। यत्र तत्र निरर्थक भागदौड़ करना पढ सकता है, कार्यक्षेत्र में अवरोध।

मीन राशि - इस मास पारिवारिक स्थितियों के कारण अस्त व्यस्त की जिंदगी बनी रहेगी। अपनों का चिंता, विद्या-बुद्धि का विकास। पत्नी कि चिंता, पुत्र क्लेश, असंतोष से आप परेशान होंगे। कुटुम्ब, इष्टमित्रों का सहयोग प्राप्त होंगे। सामाजिक कार्यों में अभिरुचि, व्यापार क्षेत्रों में लाभ से अधिक खर्च योग बन रहा है।

नीतिकथा

महान दानी

- श्री के.रामनाथन

एक बार श्रीकृष्ण महल की वाटिका में टहल रहे थे। उस वाटिका में रंग-रंग के फूल खिलकर सुगंध देने के साथ उसकी सुंदरता को भी बढा रहे थे। उस वाटिका में बडे और ऊँचे छायादार पेड भी अनेक थे। श्रीकृष्ण एक पेड की छाया में बैठकर आराम कर रहे थे। उस समय उनसे मिलने के लिए नारद जी उपस्थित हुए। उन्होंने श्रीकृष्ण को देखते ही नारायण! नारायण! कहते हुए उनके चरण छूकर प्रणाम किया। श्रीकृष्ण ने नारद को आशीर्वाद देते हुए उनका कुशल-मंगल पूछा। उसके बाद उन्होंने नारद से पूछा कि तुम्हारे आने का क्या कारण है?

नारद जी ने बडी विनम्रता से कहा, ''हे भक्तवत्सल मेरे मन में एक संदेह उठ रहा है। उसका समाधान सिर्फ आप ही कर सकते हैं।''

यह सुनकर कृष्ण ने स्नेह से पूछा, ''कहो नारद! तुम्हारा ऐसा क्या संदेह है?''

नारद ने बडे भक्ति भाव से श्रीकृष्ण को देखकर पूछा, ''हे महा सारथी! इस संसार में बडा दानी कौन है?''

श्रीकृष्ण ने छट से कहा, ''इसमें संदेह करने की क्या जरूरत है? इस सारे संसार में बडा दान वीर सिर्फ कर्ण है।''

यह सुनकर नारद जी ने अपना संदेह प्रकट करते हुए पूछा, ''हे कृष्ण! पांडवों का ज्येष्ठ है युधिष्टर, उसे धर्मराज के नाम से भी बुलाते हैं। वह भी अपने पास दान माँगने के लिए आने वालों को कुछ न कुछ दिये बिना नहीं रहता। पर आप की तरह लोग भी बडे दानी के रूप में सिर्फ कर्ण का नाम ही लेते हैं। यह कहाँ का न्याय है? कभी भी दान देने को इनकार न करने वाले धर्मराज के प्रति ऐसा अन्याय क्यों हो रहा है?''

यह सुनकर श्रीकृष्ण मुस्कुरा उठे। उन्होंने नारद जी को देखकर कहा, ''कुछ बातों को सिर्फ आँखों से देखकर या कानों से सुनकर विश्वास नहीं किये जा सकते है। सिर्फ अनुभव के आधार पर ही विश्वास कर सकते हैं। इसलिए तुम अब मेरे साथ निकल चलो। तुमको महान दान वीर को समक्ष दिखा देता हूँ।''

उसके बाद वे दोनों अपने को ब्राह्मण के रूप में परिवर्तित करके धर्मराज युधिष्टर से मिलने गये। युधिष्टर ने उनको बडी खुशी से स्वागत किया। उसके बाद धर्मराज ने उनसे पूछा, ''मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?'' तब श्रीकृष्ण ने कहा, ''हम विश्वशांति एवं भलाई के लिए एक महान यज्ञ करने वाले हैं। उसके लिए हमें चंदन के पेडों की जरूरत है।''

यह सुनकर धर्मराज बडे हर्ष से कहा, ''जरूर, मैं यज्ञ को सफलता पूर्वक करने के लिए आवश्यक चंदन के पेडों को देता हूँ। इतना कहकर उसने अपने नौकरों को आज्ञा दी कि बडे-बडे पेडों को काट देकर इन ब्राह्मणों को यज्ञ करने के लिये उचित सहायता करो।''

राजा का प्रबंध देखकर श्रीकृष्ण ने कहा, ''अच्छा, आपकी सहायता से हम खुश हैं। पर अब यज्ञ के लिए अनेक दिन है। इसलिए हम आपसे बाद में मिलकर उन पेडों को ले लेते हैं।'' इतना कहकर वे नारद जी के साथ

वहाँ से निकल पडे।

श्रीकृष्ण ने आते समय नारद जी से कहा, ''अब तो वर्षा का मौसम है। यदि वे नौकर चंदन के पेडों को काटकर लायेंगे तो वे सब गीले होंगे। उन गीले काटों से यज्ञ रचना असंभव है।''

उसके बाद वे दोनों कर्ण के पास गये। वहाँ भी श्रीकृष्ण ने यही कहा कि हम एक यज्ञ रचने वाले हैं। उसके लिए आवश्यक चंदन के पेड चाहिए।

उनका निवेदन सुनकर कर्ण थोडे समय तक सोच में पड गया। फिर वह उन दोनों को देखकर कहा, ''यह तो वर्षा का मौसम है। इसलिए इस समय सूखे काटों का मिलना असंभव है। फिर भी मैं यज्ञ को निर्बाध करने के लिए एक उपाय बनाता हूँ, जिससे आप निश्चिंत अपना यज्ञ कार्य कर सकते हैं।''

इतना कहकर कर्ण अंदर गया और हाथ में एक कुल्हाडी ले आया। यह देखकर श्रीकृष्ण ने पूछा, ''अब इस कुल्हाडी की क्या जरूरत है?'' तब कर्ण ने जवाब दिया इस महल के सारे किवाड और खिडकी चंदन के पेड से बने हैं। अब मैं इस कुल्हाडी से उनको काटकर देता हूँ जिससे आप अपना यज्ञ कार्य कर सकते हैं।'' इतना कहकर वह तुरंत महल के किवाड और खिडकी को काटकर दान दिया।

उसके बाद वे दोनों वहाँ से निकल पडे। रास्ते में श्रीकृष्ण ने नारद को देखकर बताया, ''यदि हम धर्मराज से खुद किवाड और खिडकी को यज्ञ करने के लिए माँगे तो वह निस्संकोच दे सकता था। पर उसने खुद नहीं सोचा कि अब वर्षा का मौसम है और यज्ञ के लिए सूखे काट का मिलना असंभव है। लेकिन कर्ण से हम ने ऐसी माँग नहीं रखी, पर वह खुद समझ लिया कि यह वर्षा का मौसम है।''

इतना कहने के बाद श्रीकृष्ण ने नारद जी को ऐसा उपदेश दिया कि युधिष्टर का दान कार्य धर्म है, पर कर्ण का दान उसकी चाह है। धर्म और चाह में भारी अंतर है। यदि हम किसी भी कार्य को अधिक चाह के साथ करें तो उसका महत्व श्रेष्ठ बन जाता है।

जून-2023 महीने का क्विज-11 के समाधान

1) ओडिसा, **2)** रथोत्सव,

3) सुभद्रा, बलराम,

4) श्री वेंकटेश्वर स्वामी,

5) श्री शुक महर्षि, **6)** तिरुवालि नहराळन्,

7) अष्टाक्षर विमान, **8)** अमृतवल्लि,

9) योगनिद्रा, **10)** कुबेर, **11)** रामापुरम्,

12) ब्रह्मदेव, **13)** बदरिकाश्रम,

14) एकादशी, **15)** श्री महाविष्णु।

चित्रकथा

बकासुर का वध

तेलुगु मूल - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री के.द्वारकनाथ

कुंती ने उस परिवार को मना ली। बाकी सब प्रबंध ब्राह्मण परिवार ने किया। बकासुर के गुफा को, खाना लेकर भीमसेन गया। 14
भूख लगी जल्दी आरे! 15
हाय! बकासुरा! तुम्हारा खाना सब कुछ मैं ने खालिया। 16
मानव तुम है ना। तुम्हें चबा-चबा कर खाऊँगा। 17
तुम्हारे गले को आडा गिरुँगा। दानव युद्ध के लिए आओ। 18
भीम और बकासुर के बीच में घोर युद्ध हुआ। 19
सावधान दानव! 20
सावधान मानव! 21
हू! 22
हू! 23
अंत में भीम के पराक्रम के सामने वह टिक नहीं पाया। भीम के हाथों मार खाकर, वह रक्त का वमन करते हुए मर गया। भीम गाडी में बैठ कर अग्रहार को आया। 24
भीमसेन को देखकर जनता जय-जयकार करने लगे। 25
जय! जय! शुभ! शुभ! 26
स्वस्ति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे. प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम..
लिंग/आयु..........., चंदा नंबर.......................
पता...
....
मोबाइल नं...

क्विज-13

1) विष्णु भगवान के वाहनचालक का नाम क्या है?
ज)..

2) कश्यप महामुनि की पत्नियों का नाम क्या है?
ज)..

3) सूर्य देव की रथ सारथी का नाम क्या है?
ज)..

4) तिरुपार्त्तन पळ्ळि मंदिर के उत्सवर का नाम क्या है?
ज)..

5) तिरुपार्त्तन पळ्ळि मंदिर के विमान गोपुर का नाम क्या है?
ज)..

6) तिरुच्चित्तिरक्कूडम (चितंबरम्) मंदिर के तीर्थ पुष्करिणी का नाम क्या है?
ज)..

7) चीकू के वैज्ञानिक नाम क्या है?
ज)..

8) अदिती के कर्ण कुंडल को कौन-सा राक्षस ने अपहरण कर लिया?
ज)..

9) नरकासुर राक्षस को वध करने वाली स्त्रीमूर्ति का नाम क्या है?
ज)..

10) नारद महर्षि किसके घर गये थे?
ज)..

11) ऋग्वेद के चौथे मंडल के मंत्रद्रष्टा ऋषि का नाम क्या है ?
ज)..

12) श्रीनिवास को पद्मावती ने कहाँ देखा?
ज)..

13) कौन-से ऋषि ने अपने रूप को सुवर्ण मृग हिरण के रूप में बदल दिया?
ज)..

14) स्वामिपुष्करिणी की उत्तर दिशा में विराजित तीर्थ का नाम क्या है?
ज)..

15) श्रावण मास में लक्ष्मी देवी को संपन्न करने वाली व्रत का नाम क्या है?
ज)..

बालविकास

बिंदी को जोड़िए

रंगों को भरिये क्या!

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) तिरुपति	अ) श्रीरंगनाथस्वामी
2) श्रीरंगम्	आ) श्रीकालहस्तीश्वरस्वामी
3) काशी	इ) श्रीबालाजी
4) काणिपाकम्	ई) श्री काशीविश्वेश्वरस्वामी
5) श्रीकालहस्ति	उ) श्री गणेश

1) इ 2) अ 3) ई 4) उ 5) आ

लक्ष्मीदेवी स्तुति

नमस्तेऽस्तु महामाये
श्रीपीठे सुरपूजिते।।
शंखचक्रगदाहस्ते
महालक्ष्मी नमोऽस्तुते।।

चित्र में अंतर खोजे!

१) बादल
२) बिंजामारा
३) महिला
४) स्वस्तिक चिह्न
५) फूलों की टोकरी
६) दीप
७) वस्त्र

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
   (अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
   ....
   पिनकोड ....
   मोबाइल नं ....
2. वांछित भाषा : ☐ **हिन्दी** ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत
3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
   विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-
4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :
5. शुल्क का विवरण :
   धनादेश (BC's) / मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) /
   भारतीय डाकघर (IPO) / ई.एम.ओ. (EMO) / :
   दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करों।

STD Code: 0877
दूरभाष :
2264359, 2264543.
संपादक : 2264360

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र
ॐ नमो वेंकटेशाय

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव
(2023 सितंबर 18 से 26 तक)

18-09-2023 सोमवार दिन - ध्वजारोहण रात - महाशेषवाहन	19-09-2023 मंगलवार दिन - लघुशेषवाहन रात - हंसवाहन	20-09-2023 बुधवार दिन - सिंहवाहन रात - मोतीवितानवाहन
21-09-2023 गुरुवार दिन - कल्पवृक्षवाहन रात - सर्वभूपालवाहन	22-09-2023 शुक्रवार दिन - पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव रात - गरुडवाहन	23-09-2023 शनिवार दिन - हनुमन्तवाहन रात - गजवाहन
24-09-2023 रविवार दिन - सूर्यप्रभावाहन रात - चंद्रप्रभावाहन	25-09-2023 सोमवार दिन - रथ-यात्रा रात - अश्ववाहन	26-09-2023 मंगलवार दिन - चक्रस्नान रात - ध्वजावरोहण

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का नवरात्रि ब्रह्मोत्सव
(2023 अक्तूबर 15 से 23 तक)

15-10-2023 रविवार दिन - स्वर्ण तिरुच्चि उत्सव रात - महाशेषवाहन	16-10-2023 सोमवार दिन - लघुशेषवाहन रात - हंसवाहन	17-10-2023 मंगलवार दिन - सिंहवाहन रात - मोतीवितानवाहन
18-10-2023 बुधवार दिन - कल्पवृक्षवाहन रात - सर्वभूपालवाहन	19-10-2023 गुरुवार दिन - पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव रात - गरुडवाहन	20-10-2023 शुक्रवार दिन - हनुमन्तवाहन रात - गजवाहन
21-10-2023 शनिवार दिन - सूर्यप्रभावाहन रात - चंद्रप्रभावाहन	22-10-2023 रविवार दिन - स्वर्ण रथ-यात्रा रात - अश्ववाहन	23-10-2023 सोमवार दिन - चक्रस्नान रात - तिरुच्चि उत्सव

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthnams
Printing on 25-07-2023 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2021-2023
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2021-2023"
Posting on 5th of every month.

तिरुचानूर, श्री पद्मावती देवी का
वरलक्ष्मी व्रत
25-08-2023